C/81

23133

UNMARKED

Accession No 3233
Catalogue No.......
Date 20-11-34
Price 2-12-3

College Library

महोबाको समो

(महोबा - समय)

Mahobako Samo

BITS Pilani
Pilani Campus

Library

- Readers should not mark, underline, write, or tear pages or otherwise damage the library documents.
- The borrower should check the intactness of the book before getting it issued.
- Any book issued may be recalled by the Librarian before the due date if it is urgently required.

If this book is found, please return or inform to:
The Librarian
Birla Institute of Technology and Science
Vidya Vihar, Pilani- 333031, Rajasthan
e-mail: library@pilani.bits-pilani.ac.in

पृ. १२३ नी. २।।।।

091·954
R142MA

23133
c/66

श्री गणेशायनमः अथ महवा को समा
लिख्यते : ॥ दूहा : करत छंद पन छंद
पर क्रोध उपंगल सोय : चहुवांन चंदेल
कुल कंदल उपजन होय : १ समंदसि
षरग छपरिनि न्रप : पकर साह लियसंग :
चलि वहीर आइ मोहब वढ वरंग दहो
अंग २ छपै : समंदसि षरग छपर न
राज दिली दिस चलिव : पातसाह सुनि षबर
धाय विचहीं रन मलिव : सकल सुभट सा
मंत चंद कय मास बुधिवर लहीव जुध्ध
चहुवांन गहि वच हु वांनसाह करि रजपूत
छंड पचासरिन लूटी जवन सेन्या धनी य पध
न सात हजार पर जीत चल्यो दिल्ली धनीय :
चोपई राजा दिली दिस चल आए कू के
राइ वहीर मूलोए घायल आय महोबै थां
न सोपरिमील सुनि रहे कानं १ छंद पध
री वरुनी विवाह चहुवांन रांनं : सु वास
बचन करि २ प्रमान : जदवक — (~~चंद~~)

मोद रलि कीट दुतारं सुलतानानृपच
करलीयो आय जुगति पुरेस दिल रा
ज धाय रुली वहीर महुवें सुं आय:
घायल किलेक रजपूत संग दासी सू
मंजरी अति अभंग: पहोचें महोवें
नगर जाय वरजीयो मेल कुंदन आय:
भय विकल लोग घायल उलाप : नृप वी
ग मांझ आएज आप जिहां मैहल
कांम उतंग नेक फल भीलय जोध चोंठ
चीलय नेक वरजीयो जाय मालन लोय
बोलीयो बोल अति क्रोध होय:
गारी सुदिन उतंग हाथ वरजीयो
लोह पथर समाय लागी सजाय रज
पूत सीस धायो सुंतेर गगहि करि
बरी सादीन्ही सुजीत दडु धाल साय
उड पड्यो मच घर विरंग होय : भई
कुक सुनी पर माल राज पहुंचे जोध
करडु कम लीज चंदेल बैस जांगरज सूर
गेरे सहंसइ कुमल्हन जूर लोलं की
जाख सझि अनेक लखि गहरवार
गोहल अनेक : वाजीयो वनी फुरजुध

२
तायः हरदास वघेलो विरच मायः
आये सु लाष्क दरबार सोर गुदरीय
वात दरवीन दोरउये अवालछा
जे सुदुध्य परमाल जहां बैठे विरुधः
मालन पुकारि करिन वीनः पर
माल सुध्य पर कम कीनः दुहो ः
चकर चाग सब रजपूत सबः
क्रोध जांन परमालः सिर लगे श्राल
मोंन को पग लग परम पयाल १
छंद मोतीदांमः कीये परमाल हुक
म सु गाजिंः चले सब रावतजग
प साज चंदेल विनो फर सुष्षि करू
र वघेल खगो हिर लोह कस्कर चले
भर जांगरामल्हन लोयः सभे भर
जदव जदव होय निवाजीय बैसरु
नरेसः हुकम कीयो तीनी जष्पनेसः
चंदेल हरिदास वघेल बलिषः षं
चासउ लाष्चे उंचास चोइसः सुनी रज
पूतन वात कुरंग बंध्ये वयुं पात्र सुं
पाव सुं श्रंगः कते रजपूत सुन्योज

जब फेर सुन्यो परमाल करी जिनबेर
२६३ सुन्यो चहु वांन न छंडह दाव : करो
मत अब चंदेल उपाव : करो प्रवीश
ज सुं काज विरुध भतो तजि खेत जुरे
जब जूध असी सुनिवांनी कीए रत
नेंन : कह्यो नृप मारहु मारहु वेंन :
चली सब साज चंदेल की फोज
मिले रजपूत सनमुष चोज मिली
जब दिली सुं दिली ककर जुरे
रजपूत मरद मरूर मिले मुष आय
मुंछील जवांन : उछालत आव क्रोध
प्रमांन लगतर सायक छतीय आय :
कियौ विष, पालीय पालीय पाय :
लगे उर आंनसकतीय मेल करें दहु
वीरय है विधि वेल कटकत घायल
बजीन काट छटकत लेल निषल नि
रीट गटकत बारी यग्रिजनि दौर
चटकत घायल मोर नटकत नाचत घा
य मुंडाल चटकत चुंप वहें किरमाल
छटकत सुर घर धरपरि आय जट
दट जुंधीए जुगनिपाय : झटकत ऐक

निकोगल ऐक नटकत लुटीए कुटीए मेक:
ठठकत ~~कविकोगल ऐक~~ कायर देषी
यजूध उडुकल डोरव बाज विलध
ढढूकव दूकयस्व कयपीय: रनंकत
रूड धनंकत काय: तलथेई नीचत
वीर तमंक: थर थर कायर जीय
रमंक दर दर दोरव वीर डुरंत धर धर
चाल भयानक रंत नरंदर नुर करूर लषाय:
पर पर जुरत फुरत काय: फर फर फोज
फर फरमार बर बर बाजत धायन तीर
भर भर भाजीय लेन चंदेल: मर मर
जुधिव बुधिव बेल: उर उर छेदय धाय
ल घायलरे प्रिथीराज किलेन सुनाय:
तबे उमराव निपाइन चाल: भागी सब
फोज लषी परमाल हजार सुतीन परेध
रमंध भागी परमाल फोज प्रसिध
कोरन तीस कुं घायल सोय: रपे रंभ
वीसवे पंडव होय: गयो जुन मंजर
पांनि घाय उठावत पावन कीन सु
चीय लगे सर सेल सुलैगह गात:
करी सुम मंदरी हुग निवात निवा

२६५ जब बेंस चंदेल रतन बलीहिरदास सको
न पतन: तबै नृप ऊदल लीन बुलाय
सुनीत बक्र कीनपयापय आय: पराय
पराय अमलन दे तरवार रहे न रुघा
यल लीजयमार कहे तब ऊदल वेंन
असीष सुनो नृपये रजपूत अबीष
करो इन कु अब चूक सु माफ सुनो
परमाल नरेस जु आप कहे परमाल
सु बैन न चीन: हीयन फोज हजार
सुं तीन: हनो इन कारन ऊदठजो ह
तबें दुग चेंन लहे मन मोह छपै:
तब ऊदल उच्चरिग सुनहु परमाल
अरज इक चायल कहब अबध कीह
परमाल व्यास बक होय चोष चहुवांन
रोष सांमतन भरीय: चंदेलराय
मांनहुं अरज अरघ सरे सुं कीजी
यै: रजपूत दूत हनीयें नहीं: जीव
दान नृप दीजीयै: चोपई सुनो
ऊदल की वांनी सोई महलाइ
पत बोले जोइ हम दरबार भय
दोय रंडीय: रजपूतन परवानन

मंडिय: इहा : मलखां भूपति की सुनी : बरीसयाइव परमाल: दौर हुं उदल मारीए चायल चाह निहाल छंद भुजंगी : सुनी बात चंदेल भूपत भाषी : चलो वेग उदाल हैं वन साखी : गहो तेगह हथं सुमंध सुधावो लरो वाग वगं तमालो दिषावो वोदिये राज फुरमान डेरा सिधारे किये सच अंग निहंग निहारे दिये पंच हजार साथे चंदेल चले वाग काजे समा जे सुंडेल: निबंदू सवागं वचन सुं उकारे क होगे रजपूत प्रथीराज वारे : सुनी कांन्हे वांनी उमांनी चलाये अभंग वलि बाहु लंग मिलाये करें षंड षंड भसंडं निभारे हथ्यारं घारें द्रुति अदलिल कारे सुनो नंद जसरा के साथ वारें प्रथीराज कोलो नष गांड जारे यहे बोल वानी दलं मध्य आए विरचेवली बांह रुप्त चलाए चलावंत : सुघी बहु कौ विरली परें फुरन्यारी

उडला गछती वरंतीर मारे सुवंर्न वनके
२६७ उर फुट लनाउ चरती वनके लगे सेल
छतीस सगती भनारे किधूं जाव कं
मार कीन्हे चकोरे बहै तेग कंधूकरें
सील्यारे परे हुटतर बूज धरुनी बुनारे
लही गीके जंमं दाढ पीसं कटारी किधो
दुल्हनी हथ काढे ग्रटारी पटारीय
रंरंज कं वार बांगै : मेना सपनीग्र
ग्रत कंचू नांगै सिरंसूर प्रथीराज को
लोंन कीजै तजे रंज कं जोध वाधी
नलीजै भयेलघ बधं दडुं सेन वारे कि
धो ग्रां मिष काजि जूटे सुवनारे : ल
लगे पंजर पंजरं पार कोरे भुजा जोर
के तोर मुखी उडोरे भगी फोज चंदे
ल की उदजोंनी लखी नैन परमाल मल्ह
न सुरानी चल्यो सेन परसेन पिल्योद
भारी गह्यो सेल हथं सु म्हेल पंचारी
उतें कन्हक चहुवांन रजपूत धपा यो :
वरंवीर उदल पे कुद आयो लखो
कनक चहुवांन उदल भारी हन्यो दे
ल छतीस समती पनारी हन्यो उदन्

अंग धरनी मिलायो कीयो चहुवांन र
जपूत घायो : लग्यो हक उदल को आ
पने जं : परो फुट चहुवांन धर अंत
रोजं : लगी लेग कनक के लकी नंकवा
रे भयो मूर्छ उदलि धरनी निभरि छ
त्रै : कटे खेत चंदल सहसई कसूरम
मांन है : गिरे जिनां कर साठ दारउद
ल परवांनह : परपरिहार पचास परेचे
री सत सोरीये गहरवार सतदोय : लोय
अंतर सिर होई ये : चहुवांन परे घायल
कनक : वीस और संग्या वाई ये : कीय
चंद कहत परमाल लो प्रथीराज सो
लगई ये : दूहो : परे वीस घायल समर
और कनक चहुवांन गिरे उदर नमो
रछा : कट दाली वपमांन छपै : कट
दालीवपमांन लखि परमाल अवोलहै :
सहसई क चंदेल लेल बेलै हु वरि ताल
हु : लगी नई परमाल चोप प्रथीरा
ज सू छुंमर कहत चंदवरदाय वीस
घायल पर समर सनमध देहजु यह
परत घायल होय महुवेग वन : होनो

विरुध चहुवांण सो भवषवत मेटहि
२६८ कवन चोपई परे वील चायल रजपूत
है: सहस एक चंदेल दल है गहैरवार
सत दोय समांनो साठि असथांवनअ
सु अति जांनो दूहो: यह प्रथु कान
न सुनीय: चायल तन सुजांन चहु
वांण चंदेल सुं: कील जंगी अति
मांन: अैवीत्तौ राजा प्रथीराज सुन्ह के
कन्ह बुलाये छप्पै: सुनिव वात चहु
वांन करीव चंदेल विरुध हुं: हनि
चायल बीन चुंक अेार दासी वरसु
धरु सुन हो कनके मास सुन हो सादो,
राजा महे सुन हु चंद पुंडीर सुनहो
गुजर राम है: चामंडराय सुनिह
श्रवन सलषप जोन उचारी यव: सं
जम हराय लषन सुनीय तंत सुमंत
विचारी यव छंद पधडी: उचरि व
चेल लषिय समय: जंगह देस महोबै सुहय:
उचरीय वात चहुवांन कन: भंजीए
भूप महोबा सुधन चोंडव बोलवीर
दोलवंक धीर हुरे कमार दुनि

संक : बोलीयो वीर चंद पुंडीर :
10 पं करि नरेस पर माल धीर संजम
राय बुलाव विरंत कीए रूप चढी
ये तुरत सारंग बोल वांमी विराट:
काटीयें माल पर माल थाट सुनि
मंतकमध निदुर नरेस : भारी यों वे
त मोहे बो सुदेस : बोलो सुजैतम
तने स बुध कीजीये वेग चहुवांन
जुध मोहा चंदेल बुलिवव लख्य की
जीयें हुकम चहुवांण सुध अचलेस
बोल भाटी सु धीर हरीयें देस चंदे
ल हीर गोयंद बोल रावत राज की
जीयें राज परमाल साज : विछरारा
व करि दोव साज : कहीए वीरचंदि
ए समाज सहिसासु सांपुल कीहव
सोय : चींढए रीज अति क्रोध होय :
सांमत सूर अति विरत होय : धनी
ए मंत कयमास सोय : ~~सांमत सूर~~
~~सूर अति विरत होय~~ : दाहमा
बोल अप्रगो नरेस ! चंत यो मंत भर सुध
नेस : जय चंद पर विदुपर चंदेल :

कीजीयें मंत सविघांन बल कनवज
२६१ अेर महोबो सु वेस भंजीयें भूप नृप
विनय देस : थपीयें मंत्र चहुवांन सुथ
थार हुं परम चंदेल जुथ बुलीय चंदवर
दाय सोय : भुव भव थपवोततह अगम हो
य : बुलाय रंभ गुर राय राज भूठियो
मोहर बोल साज रंच कुंड मुड सुचि
होम तार साकुल कीनम्मरन विचार
बलजनि मथ सिवदास चाढ रोजिको
मिलातक होम वाढि अहि अलत मात्र
जपि रुद्र मंत्र तिथ लोक विजै भुवमं
डि पत्र केत की फुसपह हरि पीर पढाय :
कांस के फुल हित करि वढाय : च
कोर आंन नृप दरसदीन : पंजनसि
वंड बमु पुरस कीन रवि योग पुष्यतीय
थींन चंद पंचमो भूर आनंद कंद स
प्तमो शुक्र दल गुरु वजांन : नव मो भू
बूध बल अधिक पांन : तीसरो सनीचर
छठो केत : पंचमो भोम अरि दाहन
मेत : बारमो राह बल पठन रिंद परध
जेम बल पीठव दंद कीन्हो मुकांम नृप

वाग आय वीत्रीयवेस हेवर मयाय
२ दुहो : प्रस्थानो नृप वागमै वीथलउतरे
आय कांम कलाउपजी निपट पट
रांनी पधराय : चोपई · वाग आय
नृप कीयो विनोदह इछन राजनबेठे
मोदह चंद बुलाय कस्यो नृपही कोक
वियन वागवरनकर निको छपै गहीर
महलि प्रथीराज सबी सब कारनदि
नव कुलमपटसिर पाव लागकंद्र रस
किनन : पहर निसरह जाग किन कीया
क्रम अंगह : सीष दीन सुंदरीय : वी
रची नुंव भुंजंगह : कय मास बोलया
जो लीयो दीर्घनी दवजाइ यव चहोवांन
कन्ह नृप रांमधर सब सामंत आई
यव छंद हनुफाल नृप जग वंब कराय :
कय मास मंत्र बुलाय चहुवांन कंन्ह
रु चंद गुरराज आनंद कंद साहनी
य सचव साज विलहनवटनरीज
इय मोर किनर धीन अपरा क वंसन
वीन : सिर ताज आरब रुधम कय
मास दीन विछू चहुय राज चामंड

काज चंगाचार उपजल साज हय सूर नरसिंह
२६३ दीन ढालीन वंसन वीन: हय मांस गोयंद दीन तुर
कीस कोहक तीन हंसराज जैत परमार लटि
यी लवेगनिवार मन प्यार न दुर राय: अतपह
घर उपजाय: हय तेज रूप सूरेज: दीयराज
देवनु केज हंजीया हिमतसेन वड गुजर कन
केस कुरांन के अस दून: समपीयो राजपूजन:
मगा लीमलेसीय काज: समपीयो मांनिकुं वीज
अप लकुसम अरिदल ठेल: बिलहनां सो हंयं देल:
चहुवांन हरियंद काज समीपीयो मान
कुंवाज साह लीह हेवंर लीन अचलेस का
रन दीन सुरवांस लनमुष सूर दीय अलकारन
तूर नवलेस कोहय दीन नृप हेमसरवर
लीन डाडुल कारन हीर ताजा सुतेजग
हीर हमीर काजे हंस अपजीयो तुरकी
वंस गंभीर काज तुरंग रेस मीरंग सुरंग:
सांषलास हसमल काज दीय बुरी राज सु
बीज सामंत धोर कुं लीन अनेक हयवर दीन:
मंगाय पीलनरिंद नग लीस कीन्ह सुचंद गुर
रीज कारन कीन दोय सोहंस हेम सुदीन:

मंगाय पाट श्रृंगार मद गलित गिगमितार
व्रतंग गिरवर श्रंग मनो सिषर काजर रंग:
फिरचरचला लस्प दूर मनुं तोरत घनम दूर
असवार हैं प्रथीराज कय मास सांग समा
ज: तालेव घुघुव छेप चोकीर देषनसेछ
सन मुष सारद सष्द अहि जीवनोफन
मद जा तीस बैठीय देव: जलजीत पंछीम
लेव कग दीजन उंचो पाव: मुष लैमल
भष चाव: जल मांम कवा कमेल: ताम
कर बहिल अतिकेल भये सुगन
आनंदकंद हील गंठबंधन बंद दू हो
चलिव साज संभर घनवि सावंत सू
रसकज वीरनयाचंदेल की लोपिय ला
यर लज कवत: प्रथीराज चहुवांन
लीन सामंत सूरवर अतुल तेजबल
अतल सुतल सुधर महाबल वीरपह
ल सव अंग कंगलकाति मारव चहुवां
न राठोर मोर कुरमवड वारव: गहलोत
वघेला बगरीय: मोरीय वड गुजर
मिलव तोवर पहार षीची मल्हन राह

२८२

माहाडा चलिव छंद मोती दाम च्छं
प्रथी राजसु समीप सेन सभे सबै
सामंत सूर जतेम सभे चहुवान:
सु कांन समंध: सभे कछवाहे प
जोति सुगंध: सभे संग चालुका
सारंगदेव: सभे परमाल मुलषनह:
एव सभे संग दाहमा चामंड सूर
सभे कयमास लीये मुषनूर सभे।
संकमथजि निडूर राय: सभे
पर सांमसु बीचीय चाय: सभे लह
औह चंदेलीय सूर सभे अचलाल
ग भटीय धूर सभे परहार सुअल
कुंवार सभे लह सामंत सांषलोलार
सभे सुं बघेलयलषनलोय: सजे चहुवां
न संजमराय: सभे अत ताइय सूर
सतन सभे संग हाडुल रावहतन:
सभे संग गंभीर हाडा हवाल सभे
भरजद हमीरह सूचोल सभे संगचंद
पुंडीर मरद सभे संग पो. नधावदह
सु दस चहुवान केरी कीयो नंद नीसान
फोजां सुं केरी मुष अग्र कीन्ह सुक

मल्हन देव: सके संग मालवि मा
नस एव: सके संग जोटम जाम मरद
सके गैहलोत सु गोयंद हद सके संग
उदय राग पगार सके विछूराज लवेत
प्रधार सके संग बगर सादुल सोय:
सगे संग माल चंदेल सु जोय: सके
संग भेटीय मांन गहीर सके संग सूर
रठोर सूवीर सके नीर वांन सुधीर
म वाह सके संगवीर प्रसंग प्रवाह
सके पड़िहार सूवीय मरद सके भर
भीम खुंप्याल सु हद सके संग मोरीय
सारंग सूर सके संग तेज लडोड करूर
सके संग तारन मल्ह सहस: बलि
भद्र पूरन मलर हंस: सभयो संग
धावर धीर परम: सकयो संग
रावत सम गरम: लीये संग रावत
सूर सपन: किये जुध नाव उपायम
जन: किए दर कुच चले पहुवांन: चं
... कुच निधांन भजे सुमध्य

दल सावंत दारन थार सुन्यो परमाल क्यो
२८८ थांन उतांम : सिरत वाकोपदहावन ठांम:
कवित्त मल थांन सुणी वत्त मतबल रंग
उपायो पिथौरा पधरे लैन चोरंग समझा
यो नहीं आल्ह ऊदल करइ उपर भर संगह:
अरसिंघ बोलनर सिंघवर स्यांम मंत्र सोई
लीजीयै जय संघ सूरज पवबली मिली
अनी कहें विघ कीजीयै : चोपई
मलषांन नर संघ बुलावह अरसंघ वर
संघवहि आवह : जय संघ बोल कीयो
मत पढव : प्रिथीराज सुं जुध कीर वढव:
छंद भुजंगी : सुनि मिलषांन करन,
जुध मंडे अरस्यं घवरस्यंघनर स्यंघडंडे
सके अंग जै संपध वर संयध पंचो : करो
लोन परमाल को आज संचो हजार
सके संग भाई भतीजे सहस सके अंग
आकार बीजे बंधी फौज पर गरर लायो
सके अंगलं अंग नैनंतको यो मिली दिष्ट
सुं दिस चहुवांन केरी कीयो नंद नीसांन

वर स्यंच वीरम गोयंद राजं इए अग्र सामं
तर चिबु चलाज वरबीर सारंग मेरी महनं
पवांर लल बंजै जुध्यं सहनं : भरं भीर चालुकतं
जंमरायं: पजोनंबरं कछवाहे सपायं : जुरे
जांग जादं दिसाद घनीयं छते खीज सावंत
नृप रिघनीयं: चरं चीरि पुमार पुंडीर चंदं
अचलेस भटी पहारे सु इदं बघेला लखन श्री
मया रांम हनं भरं हाडु ली अरि मीरपन रतं
लीन सामंत बाड़ सुजानं: रची फौज चंदेल
गोयंद सांनं विचे फौज प्रथीराज समें सामंतं
वजे नदमीसां नगजे गयंनं लखो मिल षांन
दिषोना चहुवांन उठी बांग वीर रंग हीरं
चहुवांन लखी फौज वी वीर पीले चरा चीर
पित्री वरा वीर मिले करे षंड षंड भसुंडनि
भारी छवं छाक लगे वने बग तारी अन्यो
अनीप्यारी वर वीर दोउ करं कार कुटे
परं घूम होड़ लट संग लगे परं वारबती
कटं पं कर जी बिहु अंग मंती घटक घट सो
विहुं सूर नारे गदंद तिग्र कूनि दोनुं कुनारे
हायो। समानंह पंपांद ... ...

२८५ बेध्याचरं चार मांमै जरंजवांन केली सज
चाल लेई भरं भारमारेउ मारे सुलेई
रटं आइचंरहे ग्रब्ध बेसं वरं सूर ध्याव
लनावंत तेसं डउं कंत डोरू यढ्यो फेर संदं
ढ ढं कंत दोहो छोहे लोह मंदं परं कारट
चंदेल को साध सारो दरं दार किन्हं मि
ल्यो जुध भारो चके मिलषांन जु ध्यायो रि
सानो नरं जेमना चंत आवंत मांन्यो परंवि
न कन्हं वरं विच आयो हन्यो अंग मलि
षांन धरनी मिलायो भयो आब सोपसुं
परमाल वारो चल्योनर संगदास बगं सुंभा
रो लषे दोयन नर संघ कचूर होई लषो
चंदं पूडीर बीर स्यंचले लो हन्यो चायब
गी चार चाय ग्रैलो लग्यो चंद के घाव धू
स्यो सुअंग तबै मारीयो चंदवर सिंघ जंगं
तबं पिज पावंड जें लंघ ध्यायो : तजैंग्रा
वधं मार बधं भरीयो लरें मल जंगं अमं
गील लोई धर केंसं धरनी कर केस दोई
अमुभी बिरचि बीर बाहै लरें कारलल कार
करी नीर छांई : तबें दोर पावंड परन ग
हायो। समानंह चंदाद धरनी मिलायो :

हन्यो राय चावंड जै संघ भाई तबें अंग
वर संघ जंग मनाई लीयो और सवांन
गुन हो आन चाई गुस्यो संघ अरिस्यं
घ जंग पलाई दुहा: तोरि सिर सवान
ग्रनप हन्यो सेन रन माय: पांन बत्रीघ्र
म रषवि कीरि चने नह लोल ब्याल दि दुं
बिदु विध रषवि पीर वर स्यं घनर स्यंघ
परेजे स्यं घत्र गांन है: भगि अरि स्यंघले
भाय: जयो चंदेल सुथांन है: परे दोढ स
हलबाकर अवर च्यारि सहिस संगी रहि
त: पचास परे प्रथीराज के: लरे सूपूर
रतनागई वि: चोपई मलिबांन नरस्यंघ
जु परीय पीरजै यचरिजै स्यंघ अंगवांन
नभरीय: मोढ हजार बंधु परि प्रंगीय:
च्यार हजार सुंढ कुर संजीय: भगि
अरि स्यंघ महोबै आयव: सिर सवाह
भाई सुमरायव: सो परमाल सुनी यह
कांन हे: ऊंक ज्यो नर पहुंचांन अमांन है:
फिर फिर वेग पुकार आयव: प्रथीराज सब
देस दहाईव: सोपरि माल नृपति सुष लीजै सन-

२८५ पेस मार ऊरमा पवार की धरउ जार-च
देलरायछ धाय दीन फिर ग ढ मारग
ढपे सकीन: इह बात सुनि परमा-
लराज: श्राए सु कांमजस राजकाज:
श्राए सुकोम जसराज काज: सिर धुंनी
श्राल्ह लीन्हे बुलाय श्रापनौ देल सब
दल भुलाय: तरवार बांधि सिर तिलक
कीन्ह: जैवरमं जायव है वेर दीन: कीये
जेव श्रग्र सिरदार सुध बाजीयो वनो
फुर चाल जुध: दौं ठत पाल्हर श्राल्हा
नदेल: मारीयो जाय रब देस: पठांन
जयो के जेर कीन: तिहां द्रीब कोटी-
सक लुट लीन: जिलीयो जुध निलर
त जाय: सम सहावाद धगनिब
पाय: लीन्हे सुचील जयचंद रोर केलर
केहेर को मांन मोर हि डोन देसजादवद
हाय: लूटिय सुसिध नवनिध भाय:
मारे सुबे सदल सबल सोटि वघेल वाधहि
धरा बार पति साह फौज दई बार मार
पो लुक सिधकोगर्व मार सतवार षेत परियो

सइंद धरि स्वांग धरमजल राजचंद
सां करें स्वांग छांडें न कोय यह
भविष्य वाल बर कह लोय: सां करें
स्वांग कोछीडिय: अघोरनर करज पुत
पीय: तुम सम्हो आज कनवजचा
व: सां करें परमो चंदेल राव: तुम
होत वधाई नृपति अधीन: करि धीव
मल्हन देनची प्रवीन: करि रुदन मल्ह
नदे कह्यो मोह: सो माता देवल कह्यो
तोह: इहो देवल दे कानन सुनि कह्यो
मल्हन दे तोह और परी चंदेल मैं हीमल
करबें की तोह: १ चोपई देवल दे तुम
वीचा बंधीय: धर परमाल धारनां लिं
धिय: ज्छ कुं आन लगे कोइ राजह:
आला सीस दीयो तुम काजह: वीच्या
सार आल मुष गाई वीचा जग मैं सुगति
वताई: जे कोई वीचा हारन करही चंद
सूरज लौं नरकलय ही सुनि बाच्या देव
ल दे बुलिय: आल्हा सुतन महोवाचा
लिय: प्रथीराज सुं जुध जु कीजें स्वां

दीनो तीन वार चर मंजिय भारीय:
अंत दयो न्रप करि कुवारीय: २ सात
वार परि घाव लगे चोराली गात है:
जीत राज इकतीस रील कर सेंन
सभाल है स्वामि धरम संग्रह: स
ह्यो दुरजन दल जोर है: जोरूं मा
रउ जार पार निसरति जंगमारह:
वजीय चलोय तेरह वरस: पच्चासन
लग चोह कीय: चंदेल चुगल मांनी
कहीय तीजें पन परदेस जीय: छंद
पधरी सुनि वाल उचारिय भट
तींन सभुंभ श्रवन कोंन परमाल:
छंड बोल कह बापज माय: धराज
सराज न्राय चांदो सु पाल लियउभ
डंड: बारी सुदेवगढ कीन षंड: रेवा
सुं पार लीयें जुटि सर्व भंजीये गंबीर
जीरास गर्व जोटवध राष गानि निष
पाइ मेवात मार धर लइ घ्याय: पं
चाय देस पंजाय कीन: वेरार देस
को मिल दीवांन माल वारे सलीके

दीनो तीन वार चार भंजिय भारीय:
अंत दयो नृप करि बुवारीय:२ सात
वार परि घाव लगे चोरासी गात है:
जीत राज इकतीस रीस कर सेंन
सभाल हे स्वामि धरम संग्रह: स
ह्यो दुरजन दल जोर है: जोरूं मा
रउ जार पार निसरंति जंगमारह:
वजीय चलोय तेरह वरस: पच्चासन
लग चोह कीय: चंदेल जुगल मोंकी
कहीय तीजें पन परदेस जीय: छंद
पधुरी सुनि वाल उचारिय भट
तींन सभुंभ श्रवन कोंन परमाल:
छंड बोल कह बापज माय: धराज
सराज अप्राय चांदा सु पाल लियउभ
डंड: बीरी सुदेवगढ़ कीन षंड: रेवा
सुंपार लीये जुटि सवे भंजीये गंबीर
जीरास गर्व जाटवध राष गनि निष
पाइ मेवात मार घर लइ छ्याय: प
चीय देस पंजाय कोंन: वेरांट देस
को मिल दीवांन माल वारे सलीके

८१ मुष साज जुध बल कीजै : कवित्त : सुनीय
वात परमाल काल आयो प्रथीराज है :
मलिषांन कुमार मारनरसिंघ सुराज है
भंज सिर सवा नंग्र गं जिनर षंच वीर
रन हीनजे षंच दुवाह देल विहील लुटि
घन चहुवांन सबलसमर करन पातसाह
गह छंडियव : बुलाय कुंवर पीरगह ल
कल : जुध किती विध मंडइव चौपई सुत
चंदेल बुलाये दोई मलहां श्रुपति षग्गह जोई
कायथ श्रीवासकली षांन है उचरि वचन
राजी मली षांन है कवित्त बोल सुलन पर-
माल बोल कायथ कल्यांनह बोल बंध नरेंन
जोर सारंगमील षांन ह : गहरवार जो चंद
भाट जगनकोटग बुलाए प्रोहित के सब
लमभ राजवांनीवर बुलिव आईयो सेन
चहुवांन सऊ : जुध जालम सब हारी ये
हित होय जोय सोई करो तंत सु मंत्र वचा के
चोपई रांनी मल्हन देइह भषिय : राजाजु
ध मास दोय रषिय : जगनक पठव आल
बुलायव : पंग काज आस्वास पठाइव : जै
म चही छंदन मैं घायव : रुठे सेवतुं फेर मना

२ व: अंतर गुलब बंदु कवर छिय:
हेवर देव चढन को कढीय: लेले जाय
त जल रन चलिव प्रथीराज सौनकी
पर मिलिव देकाग दीनजर सब दीनव:
सब पर सोच मिलनकी किनव राजा
जगनक कनवज पठयौ जहां वना फर खबर
बठयौ आल्हा आए जुध बिचारो जो पी
थल छत्री चरम चारो पीथल निजर लों
जस बरषिय वचन जल्हन सौं श्री मुख
अषीय: सब सावंत लरन को भीरियाँ
आवें आल्ह जबें जुध करीयै दूहा:
कागद ले जल्हन चल्यो हल्यो महोबा
ठांम डेरा कर सिल तांन कर पीथल
कीयो सुकांम: १ फिर राजन वरदाय
सो बांनी उच्यो एम आल उदल चंदेल
सौ रुप गये सो कांम: २ कवित्त कां
न मंड चहुवांन कहल वरदाय मंत्र
जति प्रथम देस परमाल: रहें रस
राज सेनापति गढां लग्यो परमाल
कारवगोर निलें जंगह परिचचाल चंदेल

२६३

झेल धन रन आप अंगद रुकियो ते न
आर सेन सब स्यांम मरन सुधिय घर
व: खिलीयो याल बिनसी सधर कांमी आ
य फतें कीरय १ चोपई गढा नगर
चंदेल सूलगिव: गोड समटि जुध का
रन धगिव: भगीय सेंन लषी जल
राज है दीनो सीस स्वाम के काज
है १ दुहो: चाल परे रुक्यो सबें का
म आय जल राज: मारगोड लीन्हो
गढीह सरदें स्यांम त काज १ चोपई
राजा जीतम होवै आयव आलनउदल
पायलगायव: दे जसराज महातम
सारो सेनापति धरती रखवारो करें
प्यार मैहल दे रांनीय ब्रह्मानंद जेम
सुत मांनीय: सब धरती मैं हुकम
सु सभीयो जल जेम आलन कर
गजीयो र फेरा कीधर धोरी जाये पांच
बछे राल गे सुढाए झेलां नृपति चुगली
कीनीय: सो परमाल मान सब
लीनीय: नृपति कलंजर देषन कीनव:

४ राजा आल्ह बुलाय सोलिनव: पांचवद्धे रामांग्या दिजव: उनके साटे हयब ललिजव ५ घरे बैठ देवल देषिजीय: पूतव छेरा देंन न कीजय: वास छाड कनिवजो को चलिव राजा दल पंगुर सुं मिलव ५ नृप परमाल कही मुष वांनीय आल्हा देहुं वछेरा आनीय: नीतरि वास छाड के चलिये आंनली ठांन ठिकांनै मिलीयै: ६ सुकर वचन आलघरि आयो छाडयो वास पयानो करायो साइन वाल न सब ही लीनो कनवज दिला पथांनो कीनो ७ जागीरी नृपपति की मारीय: बसली माहि बहुत उजारी य: परिपाटी पीरहार सु चुकीये उदल मुष का हुनहि रु की यै: ८ कवित्त आलगयो कनवज छाड पर माल वासवस: भोपत की जागीर माहि जार जारी घर कीर आदर जयचंद दीन वड देस सु भारिय: घो

२२८ काट घाट परमाल देसदल हम कुरम
किरवांन रद्ध लीन्हो समहाबलली
न्हे सु पील जयचंद केसीय लम ग
नीज लुफ्फ सुनि भटव टरज पुतकी
राजन जांनी नांह कुछ १ हम आ
गे पतिसा ह : फोज भगी दस बार है
हम निसरति बांलूंट कीऐ दल लुटि
सबु नारह हम जीते घर गय्यो: ह्या
दल प्रबल पठान है हमरे बातर
जीतवर निबाहि निवउठांम है मेवा
त मार पधिर करिय: अंतर वेद दहा
ईयव: वघेल मार व सुधा वडो घर
चंदेल निल्याईयव १ चोपई राजादस
जीते जात राज है : जीत राजई कवीस
माम्क है : ताको फल राजन इह कीन्हो:
हमकुं देस निकालो दीन्हो लिन पाले
हम बेल सुनिव राजा जीत चालि ल
कल निव : सातवार धावन पर अंगह
मेंजीतीयो परमाल सुं जंग ह सातवार
उरल जुध्ध कीनो जीत पत्त चंदेलन

८ दीनो तीन वार घर भंजिय भारीय:
अंत दयो नृप करि छुवारीय:२ सात
वार परि घाव लगे चोराती गात है:
जीत राज इकतीस रीस कर सेंन
समात है स्वामि धरम संग्रह: स
ह्यो दुरजन दल जोर है: जोरू मा
रउ जार पार निसरति जंगमारह:
वजीय चलोय तेरह वरस: पच्चालन
लग चोह कीय: चंदेल चुगल मांनी
कहीय तीजें पन परदेस जीय: छंद
पद्धरी सुनि वात उचारिय भट
तींन सम्भुंभ श्रवन कांन परमाल:
छंड बोल कह बापज माय: धराज
सराज अप्राय चांदी सु पाल लियउभ
उंड: बोरी सुदेनगढ़ कीन षंड: रेवा
सुंपार लीये जुटि सर्व भंजीये गंबीर
जीरास गर्व जोटवध राष गनि निष
पाइ मेवात मार घर लइ छयीय: पं
चीय देस पंजाय कीन: वेंराट देस
को मिल दीवांन माल वाके सलीके

८१ मुष साज जुध बल कीजै : कवित्त : सुनीय
बात परमाल काल आयो प्रथीराज है :
मलिषांन कुमार मारनरसिंघ सुराज है
भंज सिर सवानंग्र गं जिनर स्पंघ बीर
रन हीनजे स्पंघ दुवाह देव विहील लुटि
षान चहुवांन सबलसमर करन पातसाह
गह छंडियव : बुलाय कुंवर पीरगल ल
कल : जुध किती विध मंडइव चोपई सुत
चंदेल बुलाये दोई मलहां श्रुपलि षग्गह लोई
कायथ श्रीवास्तव कली षांन है उचरि वचन
राजी मली षांन है कीवत्त बोल सुलन पर-
माल बोल कायथ कल्यांनह बोल बंधनारैं
गोर सारंगमीलषांनह : गहरवार गोयंद
भाट जगनकाढिग बुलाए प्रोहित केसव
लषम्क राजवांनीवर बुलिव आईयो लेन
चहुवांन सऊ : जुध जालम सब हारीये
हित होय जोय सोई करो तंत सु मंत्र वचाके
चोपई रांनी मल्हन देइह मंषिय : राजाजु
ध मास दोय रषिय : जगनक पठव आल
बुलायव : पंग काज अरदास पठाईव : जै
म चही छंदनमै चायव : रुठे सेवतुं फेरमना

व: अंतर गुलब बंधु ऊवर दिय:
होवर देव चढन को कहीय: लेलो जाय
त जल हन चीलव प्रथीराज सोनदी
पर मिलिव दे कागदनिजर सब दीनव:
सब पर सोच मिलनको किनव राजा
जगनक ऊनवज पठ्यो जहां वना फर ऊबर
बठ्यो आल्हा आए जुध विचारो जो पी
थल छत्री चरम चारो पीथल निजर सों
जस बरषिय वचन जल्हन सो श्री मुष
उपजीय: सब सावंत लरन को भीरियौं
आवें आल्ह जबें जुध करीयै दूला:
कागद ले जल्हन चल्यो हल्यो महोबो
ठांम डेरा कर सिलतांन कर पीथल
कीयो सुकांम: १ फिर राजनवरदाय
सो बांनी उच्चर्यो एम आल ऊदल चंदेल
सो रुप गये सो कांम: २ कवित्त कां
न मंड चहुवांन कहल वरदाय मंत्र
गति प्रथम देस परमाल: रहे रस
राज सेनापति गढ लग्यो परमाल
कारवगीर निसें जंगह परिच चाल चंदेल

काट घाट परमाल देसदल हम कुरम
किरवांन रद्ध लीन्हो समहावल ली
न्हे सुपील जयचंद केसीय लमग
नीज लुफ्फ सुनि भटव ररज पुतकी
राजन जांनी नांह कुछ १ हम आ
गे पीतसाह: फोज भगी दस बार है
हम निसरति बांलूंट कीए दल लुटि
सबु नारह हम जीते घर गए: हय
दल नबल पठान है हमरे वातर
जीतवर निबाहि निवउठांम है मेवा
त मार पधिर करिय: अंतर वेद दहा
ईयव: बघेल मारव सुधा वडो घर
चंदेल निल्याईयव १ चोपई राजादस
जीते जास राज है: जीत राजई कबीस
माझ है: ताको फल राजनइह कीन्हो:
हमकुं देस निकालो दीन्हो लिन पाले
हम बेल सुनिव राजा जीत चालि स
कल निव: सातवार घोवन पर अंगह
मेंजीतीयो परमाल सुं जंगह सातवार
उरल जुध्ध कीनो जीत पत्त चंदेलन

दीनो तीन वार चार भंजिय भारीय:
८ अंत दयो नृप करि बुवारीय:२ सात
वार परि घाव लगे चोरासी गात है:
जीत राज इकतीस रीस कर सेंन
सभात है स्वामि धरम संग्रह: स
ह्यो दुरजन दल जोर है: जोरूं मा
रउ जार पार निसरीत जंगमारह:
वजीय चलोय तेरह वरस: पच्चासन
लग चोह कीय: चंदेल जुगल मांसी
कहीय तीजें पन परदेस जीय: छंद
प धरी सुनि बाल उचारिय भट
तींन सभुंभ श्रवन कांन परमाल:
छंड बोल कह बापज माय: धराज
सराज आय चांदा सु पाल लियउभ
डंड: बारी सुदेनगढ़ कीन षंड: रेवा
सुंपार लीये जुटि सर्व भंजीये गंबीर
जीरास गर्व जीटवध राष गनि निष
पोइ भेवात मार धर लइ छ्याय: प
चीय देस पंजाय कांन: वेराट देस
को मिल दीवांन माल वादे सलीके

मी धरम को जस बहु लीजै तब ऊद
२५१ ल फिर बोलीय बांनीय: हुंडु महोबें
की चस चांनीय: बुरे हाल काढे
पर माल है: सो वह भुल गई अब
आलह: जचन के भर अछे पर जाव
हुं नगर महोवे की लगे अमावहुं:
धर पोरज सरा जस रजन अपीय:
हम कनवज ऊतन करि पपिय: दे
वल दे कह वांभनर बीय: छत्री धर्म
भरम भय भषिय: स्यांम सांकरें देहन
कटिय: हों करतार कुम क्यो क
रिय: माता दीन वचन कर रो ई
तुम सब वनां परन की बोइ जंग
वचन सुनके नहि नचिय: ते रजपूत ध
रम नही संचीय: इहौं स्यांम सांकरें
जांन के रहे अवरधर सोय सोरां नी फि
रती लीयो कुल रजपूत न होय छपै:
आल्हा ऊदल सुनव: ऊठे मुरझाय करि

करन जै चंदला चलिल दोनु भीयरषत
वषत सब साम्हके कंगल अंग हुला
स: जगनक कारन संगलै चले पंग
के पास: २ कवित्त: देषनषन जयचंद
बोल आल्हन सुनोनीय: क्यो आये
व दरबार ऊदय च्यावार समांनीय:
सम्हे कवच कुअंग जंग कंदल भट भा
रीय: निदा कीये कहुनोंह नांह पुकार
इकारीय: ईम कहै बना कर जोर कर
लेन सूंज पनक आईव: प्रथीराज महोबै

देउं माता सुष मांनीयै मरे हम
जाय कुटंब सहुं लरे जाय सांमू है
करे ऋषियात घरा वहुं घरे स्यांमी
धुरलील करें किरवांनवांन सहुं : सा
मंत बंध घालें विहस : रहसखूर समर
ऋनीय उजवाल दहु कुल सुधरनर
उ मेटें संबर धनीय दूहो : घलन महोवै
कीज मत : देवल सीष उषाय ऋरज

जुध कुं हम परमाल बुलाईयव १
२८३ चोपई नेंनरत कर बोले वांनीय:
मरबें काजमहोबे ठांनीय: अबलय
पठ हमारो पायो: चंदलनढिगल रन
बुलायो सिगरीनावजाय बंध कीजें:
आल्हा ऊदल ऊत रन दीजै: छांवनक
रो हमारें पीसे छाडे अबै महोबें
आले तब आल्हनरल कीयेंनेंनह सुनि
जे चंद न्रपत्त की बैनह: कनवजलूट
रिप सस हरहो पीछें जुध महोबै करहो
तब जैगनक कहो विरद विसालह दीनी
अरज लिबी परमालह कर चाकरी
सेवा मांनीय पीथोरापं कुमव पठानीयं१
कवित्त: वंच अरजजयचंद कही मुष
पन भाटबर कर चाकरी न्रगर करहुं
उपर आतुर कर पीथोरा पाच्छरे चीग वड
जोग सुक्कीनव: लुटसर सवानग्रलुट परती
रिप निलव: पठाय कुंमक संग आलके
जुध समर भरलगईय: संभरीय गाजलि
जपाल सूव: जुदि सजांन जुर पंगईय: १दुहौ:

२९४ वंच ग्ररज जयचंद नृप बोलदिकोनज
रुर विदा करन सेन्या सबै ग्राल्हा सं
ग गरूर २ छंद मोतीदांम : विदा कीए
ग्राल्हन पंगराय दयेद सहे वर साज
वनाय : दये दुय पील सुं उजल दंत :
छहूं रि तछाय रहै मद मंत : दये दस
वीनक मोतीय माल : दई कर पोचिय
वैज विसाल : दिये सिरपाव कसे विय
सात : निरषत चंद मुकें तिय जात :
करारि करार दीनई दोय : रषो तुम्ह ग्रा
ल छत्री धम होय : बुलाय वली बलती
कमधेज : धरे धरम सीस जुं छैत्र धरे
ज : दये संग फोज पचास हजार दए
दस मील ग्रतार जुभार दये संगमो
रिय रूपसि सुध दए संग चालुक के
सब जुध दये संग तोंवर बोयघ
वीर दये संगयो दवहे दग हीर दयो स
कबार सु कुंवर पाल दयो संग

बैसन पंग सुकाल: दयो संग सागर-राय
२८५ अमांन दयो संग ताल्हन तेज पठांन :
हजार पचास ए असवार घरे कुलस्यां
मित धर्म दुतार दये नृप आल्ह कुपांन
मंगाय: लही नृप सीस चंदेल सहाय: जगन
न कारन पील मंगाय: समपय पंगुर
सीज बनाय: दिये सिर पाव तुरी दुव
सुध दये द्रव्य बीस हजार बि[illegible] छूध
दये दुय गांव अपटलि थाय: लग
पय भाट कुपं गमराय: उठे जयचंद विदा
करि आल सम पय फोज उहे ततकाल:
पधारिय आल्ह हवेलिय सुध घरे मनि
मेक पिथोर सु जूध हवे लिय आयच
लीव सु बीन मंगाय के पालषि बंध
नवीन: पठायक देस पठोरन सूर पहू
ठकुरायन मेज सुनूर दये संगउदल
जोध दुवाह गही सुमोह बकी केरक
रीह: कराय कमारच पजानि आल :
अंगनक आदुत दे ततकाल: बंधी
फिर बांन पठे हय सोय पठे चलउदल

मंदतिहोय: चढे जगनकहीये जुधचाव
अबै मुष मानुं चंदेलन राव: निकैलि
क नोक जक बाहर सोय: तहां भय
सुगन हारु न होय सनै मुष काग कुरैलि
य कुक: भयो दिसि जीवनु दोर अलूक:
हनुकयभारनिरेष सुगंन: लषी जब आ
ल्ह मुषेकिवदन चोपई मुलकि आल्ह जब
बोलिय वांनीय: तै कछु होनहार यह
जांनीय: सावंत सूर नई घ जसिबिव: अरु
कवि चंदन भवांनी भषिव उन तौ जुध
न जीतें कोईयव: हिंदु तुरक मिलेंभर दो
ईयव पात साहलरि उन सोहरवि: कन-
वज पति को गरब जुगारव: इहो होन
हार औसें लषे कहेजुं आल्ह उपाय: हम
लांवत सब कूम है: राज चंदेलनिजा
य: कवित्त: दुरजोघन परमाल सो:
तोवरज्यो नही मानव: जब घायल
भारही कत लबही हम जानव: फिर
फिर उदल वरज: करी वीनती हितका
रीय: चुगल निगली करीय: बात

विगरी ग्रति भारीय: हम जीवत परमा-
२८७ लकौ : राज दुख देषांन हीय : सुनिभर
वर राजपूतको विहि ग्राल्ह ग्रैसे
कहीय: चोपई जगनक कहै हमे सब
ही जांनीय: होन हार ग्रनगत नही
मांनीय: गंगा जुत डेरा दिजीय सुनोव
नी कर दील न कीजय: गंगा लटडे
री कर चायव: कुम कदई सो ग्रान
मिलायव: लाषन लीलालनसी दोईय:
इन मिल ग्रांन मित्रता होइय: दु हौ
देवलमऊ मांनी करी सब संग ए कै
काज: ग्रन घ्रत उपरा करीव: बहु
पकवांन समाज: १ रात रहे उलरे
नदी चले महोवे वार कुम कली येजै
चंदके कुम कुंवीर जुझार २ छंद पधरी:
चढि चले ग्राल्ह उदल सोय. उर संग्राम
धरम रतो नरोह: गजि चंग भीर वजे निसा
न: सा भिव जुवांन ग्रति जोरवांन: धरि
पील ग्रंग पचास पांच: ग्ररनि मंक
धारंत ग्रांच: जीवनो साज सारसकीन

सें मली भष मूष भष हीनः च्रकव दिठव
मग दिस मांमः हय नैन भरय बिन बि
य तोंमः फोकरी डोर छाडी सुछायः जं
बुकस बद बोले कुमाय मूर जिममधि
एक कमंध किषिः यह चरित देष लषन
बिलषीः हंस कीह छालय हइहा
लगायः रजपूत वंट मंगल वतायः ति
हवार सौच कीजें न कोयः रजपूत
मरन इक विकट होयः दर कुचर
कीन्हे पयांनः धारि जुध छायुछति
वि बुधवांन कहुं एक दिवात विलम
न चीयः परिमाल हेत बंधिनेत भाईता
रं तुरीय मां वत मृग भुव भुवषि भोग
भोगै सुरग परिमाल प्रतिज्ञा कीये जो
ध वडुवांन पांन लिष विषम बोध पठा
य दीन कासीद एकः परमाल जोध लि
षि छरज मेकः केसर मंगाय केस्या कीनः
पुजंत इस लेवा छपधीनः उछा रु छपधिक
कीये भ्रात दोयः सांकरे स्वामि जान्या स
लोयः कासीद छाय परमाल पासः बैठियें

२९९ नृप ऊंचे आवास: गुदराय बैठ दरबार
जाय: आऐ सुवना कर दोउ भाय: सुनिरा-
ज हरष मन अधिक कीन्ह कालीद बोल
हजुर लीन: उचरें बात चंदेल राय: कित
नी सेन आल्हने मिलाय: बोल्यो बोल
कालीद पाय: पचास सहस दीये पगरा
य: लषन भतीज नृप संगदीन: सिरदार आ
ठ दोय लार कीन: दूहो: सुनवांनी कालीद
कीय नगारें तेन: साज वाज सब सुध्धवै
आये सब सेंन: १ चंद्रायण: दोरनकी व
बुलाओ: सिरधर ढिलि सूर ढिग आयो:
जुध वीच चंदेल सु कीन्हो: यह परमाल
लिख्यो कर दीनो २ दूहो: लिख्यो वाच
संभर धनी कीयों जुध को चाव: मांनु
हरावन उधरें को पोरधु कुलराव: ३ भुज
नोभी मिनट: संभर वीर नरिंद: बेरमधर
परमाल कों भयो नगारो नंद राज कीन्हो
सांननंद: पोन विहसि सांवत सूरयं मरदन
कराये अंगन्हाय: पंन पाए सरियं उल
सुनि अपछर करि वसु छर अंगमंजन

कीनयं बढो फिरें सुरबी बाल अबी नैंन अंजन दीनयं ४ हरषें कपाली बुलें तोली रुं रुमाली धरनै : चोसठ अंगलि घ उछंग पानी पात्र सू धरनै : पलच री ध्यावै गीत सावै चित्त आवें मंगलं : चहु आंन चंदेल सेलबेल मिलें मेलउ दंगल चोपड़ सांवत सूर बढो जुधचा वट सारस मंझ संभरी रावट : इतें सु भट कवच अंग लीन्हें उतें अपछरालि गार सू कीने : ६ इहा सुरा कवच व नाय तन मंगल कीन्हो चाव उतें अ पछरा तन समै : अंजन कीन सुभाव : ८ छंद भुजंगी : इतै सूर न्हावै करे ध्या न ध्यानें उतें अपछरा अंग मंड्यो सु तावं : इते थे पटकार कसि सिर उतंग : उते अपछरा कंचुकी कसि अंग : इते सूर रांगं वधें ताय तंगं : उतें अपछरा चरनीया पहरि जंगं : इतें पाघ पेचं सवा रंत सूरं : उतें सीस फुलं गुहावंत हूरं : इतौ सूर वा बाघ पेम्हल मंडारे उतें अंड

इतो सूर बरछालाय अनाधारी उतै अपछ्
र हथ वरमाल धारी : इतें सूर तुरसीनकी
माल नाई उतें अपछरा नथ मोती वनाई-
इते सूरवा कर कुमांन नावै उतें अ
पछरा चमकि नैंनि चलावै इतें तंग सा
वंत घोरे न लीयं : उतें अपछरा सकि
विमांन कीयं : कहे कवि चंद निरखी
सखो उ वरन्यो समांन परी सूर दोउ
चोपई परी सूर वरन कवि दोउ : उत
पर माल सखो दल सोउं दोयको लको
अंतज कीनै : दहु दल आय पहांनो
दीनै : १ दूहो : नोमी लिष सुक्ल हो

301 रंभ सु मागंसवारे : इतें सूर सबे पडे कग
मांजे : उते अपछरा अंजन नैन आंजे इते
सूरजमला छके वार दीनौ : उते अपछरा भा
लपें तिलक कीन्हो : इतें टाल सूरं आलि
बंध गावें : उतें अपछरा श्रोता टंकनावें :
उतें सूर दसतानि हथ्थं सु कीयें : उतें अपछरा
हथ्थ मैंदी सुंदीये : इतें सूर करके हरषीन
[illegible]षीने : उतें अपछरा कंकन पान कीने :
[illegible]

२ दिवस : रहे सकल सम सूर दोय
कोल के आंतरें कर मुकाम बल
सूर २ कवित्त: कर मसलत परमाल
आल्ह ऊदल ढिग बोलिव: अरु काय
कल्यांन धरम धर प्रोहित मल्हव:
बुलिव जगनक भीर बोल लायन कम
धजह: बुलि आल्हन पुरकु बोलीयो
भूपति मलह: रांनी सुं बोल पर देखि
व: देवल ढिग उचारी यैं: परमाल कहै
सामंत हो तंत सुमंत विचारी यै याप
ई बुलिव भोमा साह सुजांनिय राजा
आल्ह मत सोमांन ह धावें कारन ढिग
बैठारो पाछें लरन को मंत्र विचारो १
राजा उठ मिरन को आयो धावें ढिग
आल्हन बैठायो: रांनी मलनदे ढिग
बुलिय: पाछें बात मतें की बुलिय:
२ तेज पिथोरा को अतोल कहीयैं: ता
सु जुध किसी विध न्हीयैं: हारनगर
महोबा छंडिय: दंड देह तो अपज स
फुटि फिर देवलदे बुलिय. वांनीय: सुनो

३०३ श्रवन राजा अरु रांनीय: नीकी होय
सो करो विचारं परि गहबोलमकोलउ
चारं ४ सुनियो मात आल्हयो भाषय:
रामायन भारथकी साषेय: स्वामि लोक
र छांडिन करे: चंद सूरजलो नृक न है.
५ अपनो स्वांमि सांकरें छाडै: आपन
आय केर घर मांडै: पावन नीर जोलों नृक
परइ तोकी साष व्याल सुन मरइ ६ वाघ
घाम परिलोइनि होर अपनो अंग जुंघ
सुं टोरे जालो जार जाल सो कहीयै
आलन बीज अरूलन लहीयै ७ घर दरा
बें आपन मरें छित्री धर्म खील परघ
रें माया घरकी दुरसु बेधै बैरन सूरज
मंडल बेधै: ८ मोह आलरा जोकी भावै:
बेटा की कुछ दयान आवै: बेजीवत ल
ती कहनारीय: पारवती को अंस निहा
रीय: ९ बोल्यो आल्ह सुनो तुम माता:
कल कुमांहर हरखें आजि बाता: सां
मरी सकी फोजें मारे: सावंतन विहंड
कर डारे: १० में कुल काज चाउं पानीय:

४ भुवमंडल सब हीनै जांनीय: इंदल
की रखवारी कीजो: देवल की तुम
लीज वहीजो: ११ मल्हनन दे फिर बो
लीय वांनीय: आल्हा सुणो हमारी
कांनीय: सावंत सूर विषम आनि
सुनीय: राषो देस डंड दुनीय: १२ उद
ल तमक बेंन सुनि कही पहिलै खेली
काही मलही घायल मारत मेवर जांने
अब क्यो माता भये सयांने १३ दूजो: च्यार
वार वीनती करी मांनी नही लिगार
अब क्यो राज समझीयै लषी सांवत
निभार १४ हमउ भांनि रखें नही अहरी
बुरी नरेस: काम आवे ते विगहैं: नगर
महोबा देस: १५ तुम आजे परमाल ज्यो
मरहें दोनु भाय: अब सूवरें सूर आछरी
राज चंदेल न जाय: १६ होन हार को मेर
है: कीह देवल दे सुध्य नोन लीस चंदेल
को: पूत उजारो दुध्य १७ मसलत कर
बांहर कढे: उदल आल्ह नरेस: उतें रे
नपु कार के घोडद डायो देस १८ जारे

गांव वउ जारके लूंटिय अचेत : दोरो
३०२ लेरो चंदेल लुम : घोरो जोरो हेत : १९
उठ आलोवरजें नृपति आज लनीक
वीर काल करे चहुवांन सुं घोरे कुक
विचार २० जीधरतीको बाधकें चुवां दे
षें सोय : कहे आल्हू परमाल सु :
छत्र धर्म न होय . २१ बांवर की दे बैंबुरी
अंगर पवारन सूर कहे आल्ह सपूत
को : दीजै नरक करूर २२ बावंर
को घर लातके इंद्रीर सही कराय :
कर आल्ह उहि नरनकुं नरकर हजु
पलाइ १३ बिगरी देखै नृपन की चाकर
कलंकन होय : साठ सहस लगनर
कमै कीजै स्वांनन लोय : २४ चोपई
इती मैं बांनी उचारीयै अब लग मैं यह
लिखें इपांरीयै : कोल कोज पीथल की ब
डेहो सोवंत के जूध विरउ डहो १ दुहो : आल्ह
कही सब ही सुनत : मन की पन की बात :
सूरज मंडल भेद है : ते छतीला छात : १
राजन आगे पेज कर कहीवना कर

सोय: प्राप्त करो प्रथीराजसे जंग
विरुध न होय: २ सब कोई नृप सीषदे:
जैरमैहल फिर होय: रांनी से मिलत
करे: मनप्पर चिंता लोय: ३ चोपई बोली
चंदेल सुनो हो रांनीय: अबतो दिवस
पाछला मांनीय: आयचढ्यो चहुवांन
उप पारहे: अरता विन कोउन उवार
हे: रांनी कहै सुनो नृपराज: करियो
सेन सु अने समाज: प्रातजुध करि
यो अद्भुत: मिलीयो आयर ऊदल
सुतै: २ आल्हन जये हट्टवेली आपन:
ऊदल देवल मिले सुजा पन: भोजन
कीये कछे होये: चोपोई दल मिली
ये लोई: ३ भोजन करके पाछे जाइ
आप आपकी त्रिया बुलाई जैर मैहल
दोइ कंद्रप बुले: अचरासइ मृत फल
फुले: ४ परस परस आरस परलीनों:
इह विध ऊदल रंगर भीनो: अरध निस
सालग प्रेम बढायो: पाछे प्रेष वीर
रस बढायो: ५ कवित्त: पहर निसा पाछ

3.6 लीय नहांन : को नीर मंगाय व कीर
सिनांन : दातन ध्यांन गोरष को ध्याय
व करव बनां कर होमन वग्रह र जा कीन
वह नृपता काज : जंत्र धार कर कंठ
सु लीनव : आईयो तुरीव पहलो पहर
समर समेता परि उठईय : चहुआंन दाल
ले पहुचीयो रनपर धावन वठईय : १
उदल वीर बुलाय : बोल इदल सुत की
न्हे देवी आगें आय : चोय पद नांम सुं
कीने : पीथोरा उपरे हियेज करके उठ
जावहुं सोवत सांकरे स्वांम छटमार
दहां उहुं उजल जल जस रीज कर
देवलदे उज करहुं पर चोड वात परमील
कर सील इडु रुंडन धरहुं . २ चोपई
इह सुनि उदल वचन उचारिय : माई
तुमनी कीजु विचारीय : सोवत न सुष
गन खेलहुं : प्रथीराज केधरन पेलहुं : १
देवल कहे सुनो सत दोईय नौन हलाल
करो तुम सोउय : गोवंद आगे सील जु दीजें

निरभै राज स्वर्ग को लीजे : २ ठकुरानी
ऊदली की बुलिव : सुनियो सो सचन
यह बुलिव न हुचे वेद निगम यूं भाषै :
पीय कुं मरत्त त्रिया तन राषै : ३ दुहा : पि
य ही मरत त्रिया रहे : करे पुत्र की
आस : वह नारी निहचे करें : वडे नर
कमे वास : १ पीयर न मांही मरें नारी
सलीन होय : अगति जाय भटकत
फिरे कहे जग रेजा सोय : २ पीय मरे
त्रिया आदरें : पोषे सकल सरीर
वह अपतन कू करी रामृत कही
गहीर चोपई राजा जागनगारे कीन्हो :
आल्हा काजें आय सदीनो सिंघ ना
द वजी सह भाईय : बनी पष रहै वर
भारय : १ बुलाय आल्ह ऊदल राज की
न्हे सुन गोर वंब साज : साजी पीसा
भ अनेक जोधा सावंत सूर करिव को
च २ बुलाय आल्ह नृप अंगलीन :

०८ बिल हने राज बरन सु कीन : अरि रन दीन
आल्हन काज : मान कहीरिपनांन साज :
३ गोबंद काज दीये मृगराज : पर काज
देल गीय समाज : बोदलो दीन नवलेस सो
य : उपजीयो कछवर सुघरलोय : ४ दल
ठेल तुरीय आरब उच : समपीयो रा
ज उदल समुच : हरि चंद काज हर
बाज दीन : षंधारवंस उपज्यो नवीन.
५ हंजीयो दीन गोपतिराज : काल बिउच
नृप लीये बाज : नारनेंकाज दीये लेज रुप :
औरेरा कजा तलीये नृप अनूप · ६ जगन
क काज हय मोर दीन : दल ठेल तुरी
गुष अग्र कीन : पायगा तुरीय इग्यारह
हजार रीनि बांट कर कर विचार सात
हजार साठ पर माल लेंन : सारीयो सार
चंदेल लेंन : डोपील दोयसन घरि हरोल :
पजरीय झट पटंत लोत : पचास सहस
पंगुरे दीन : चंदेल काज परमांन कीन :
पंचास पंच घरि पील अंग : गांजंत मद
चाले सुरंग : वे गीयो पछहिय आल्ह लोय :

परमाल राज उचरयो जोय: पचास पील
चीढ जसा नंद: सामहो चढ कुर करो
दंद: उचरें वनाफर सुनि चंदेल: हेवर
चलाय दल करो लेल: प्रहार उचरव
सुन छराज: आसरें आल्ह रहु पढिवजा
ज: बेठल पील सब सष्ट पूर धरिहें स
मार तें लीस सूर रह वात सुनी चहुवांन
रांन: वजायो वंब सामहो चलान: मुष
अग्र कनह पुडीचंद: विहत्तीयो वीर सुनकां
न सद: दिषिय सु फोज चंदेल राव: का
पन देहड गमगंत पाव: द्रिग मुदि कंप आ
ल्हा बुलाय: कालंजर मेल्हो मोह जाय:
दीजीये दंदंड प्रथीराज काज: छंडीये
आल्ह समर समाज: दीजीयै सूता अध
देस वंट: चहु आंन सुंग जुध नांह घट:
चोपई कांय कह्यो परमाल नरेस है: राषे
आल्ह दंड वर देस है: लाष पांच द्रव्य अर
कन्या: देवहुं आंन मिला पलुं मन्या: १
दुहा: देष कांन्ह परमाल नृप: वचन
कहें स्रुति अंध: मोह कलंजर मेलीयै:

311 देव धर अध समंध र महला भोपत संग
दे दलो कौरव चंदेल पिली: दरीयाव स
मांन अभांन हली इकलेष सु कन्ह अमान
कीयें भरचंद मली सुर संग दिये कमध्वेज
सुनी डुरलेषनयं: अग संजमराय सुभै ष
नयं: अचलेसन वेंलहरी संघयं जद जादम
जाम रबी रधयं: इतनै सिरदार अगें धरयं:
फिर दाहिनि बाजुव कौ भरयं: कछवाहे
पजोनर पालनयं: नर संघ पहार सुतोमर
यं: तह धावर धरि समोवरयं: विक्रम रा
ज नसमाक्र सुयं वरयं: परवार सुलेष
सुडं मरियं तह षी जियदेवरु जैत पिले:
सगहा हुलराय हमीर चले दिस देष सांवत
एकरयं: हनवंत समोहली वरयं दिसि बा
इय भोय चंदेल कियं: अचले समलेस
पसंगि दियं: दोयदीन हमीर गंभीर नरं:
अत ताइय संभ इस वरं: तह माल चंदेलय
पूरन नयं: दिस वांम दिसा मुषनूरनयं: त
हसीत जमाल कमंध बली परिहार
सुनाहर आग चली: सह सामल सांषु

,१२ लसंग दियं : इतनें सिरदार सुबामकि
यं: कय मास कमंधज विक्रमयं: तह्या
क सुं चंद सुबीर मयं: तह गोरस पंतय
मोर दलं: तह बेत बघार सुचाल भलं:
कय मालहुं संमर मेंधि हुवं. चतुरंग
य सेन दुवाल घुवं: हल कारियसें
न नरेसरयं: भर चामंड राय वली घु
रयं: उल आल्हन कोज सु दोय कियं:
हल कार वना कर लोह लियं कम धेज
सुलेषन अंग कियं: चहुवांन सु मंगल
संग दियं: तह रूपसि कुंवर वांमसियं:
सक्षवार सुं कुंवर पाल हियं. तहो चा
लक सारंग बीर वरं: जहं जादव रेंन
सिसूर घरं: वर तोल्हन वेग हरोल कियं:
हय वीस हजार सु संग हीयं: विचती
स हजार किंगोलरची: सिरदार सुलेंष
न मेंधि सची तिन्ह कुंवसु आल्ह बनों
फरयं: जिन आग सुर उदले भरयं:
सिसि बाइ वमोहन दास कियं: सुरकी
सिय को जुध वेल लियं: अरि संच

313 संच सुसंग समाजनरं परवार सु-साज चल्यो
अग्रमरं : तहां सागरराय अमांन भये :
जिन वांम दिसा भरने मिलये : दिसदाहनि
वरमवैर गरू : दुलिये दल कायथ तेजन
रु भरनं अतता वरमोहनयं : परमाल
सबेल सोहनयं : महकम सुवागर धार
लियं : इतनें भर दातन फौज दियं : तद
बानिय राय चंदेल लियं : वह के सब
वागर साजि सियं वड गुजर देव मान
चले : दिस दोय हजार चंदेल मिले :
चौपई ब्रह्मा दित आल्ह विधि सारु
आगे ऊदल बंध सु धारु : बांइ दिसा
सु मोहन कीनें दिषन दिस पुरन मल
दीनें : पग हजार पचास मिले चलि :
और पचार चंदेलन के मिली च्यार फौज
औल्हन सजि सारं : प्रथीराज के वीस
हजार : १ दूहा देष फौज परमाल जुं :
कंप चल्यो तज पांन : दस हजार नर सं
गलें ~~फौज परमालजुं : कंप चल्यो~~ चले
महोबें थांन : १ ब्रह्मा दल फिर आयो.

१४ सिर छत्री धुम धार प्रथीराज सो पाघ
रें वजावन तरवार २ छंद भुजंगी : दुहुं
सेंन मिलें दहुवागलीनी : दहुं धारे
धरम वर ईष कीनी दहुं सांग कढी
दोउं कोप वढी दो नुंवार वांकी सव
दोउं चढी वजे भरे निसांन जंगीत
वलं : वजें नाद तुरही सवें रष्षु
सवलं दहुं नाद कीन्हे सुरं संघमा
री : दहु नांम हें के सुं हां हुं उचारी
कहें चंद कवि सुनु चहुवांन : चला
वागर टंग बाई भुजान : मुष वाल बोला
सकेरं भवांनी : मिलाये बली बाहु
धावें जुवांनी अगे कीन चंदेल सु
नाल हथी : रहें जुठ लरदार भरभार
सथी चलायो मुष कन्ह पटी उतारई
किधूं वनशंम घोहां घटाई : अगे आद
हथीनि पै हथ बाहै : वरंदंत ताबै
उतानें उमाहै : उका रत्त दंत भुजा बाहु
जोरें गज पुछ सुडं वगावें अमोरें कहुं
जे भ सूडं निपंगें गलांवे : कहुं कोप

करतछ धरती मिलावैं: कहुं भाव साधें
३२५ कहुं जाय मारे कहुं घाकवीके कहे कोप
धारे चहुवांन बलसो कीयो पीलकां
नी मुष मंत्र बोले संकर भवांनी: हंकं
हा कबके रह सेन सोर बजाबेवर- लोह
निर मोह होई करे षंड डंधरं घावधारे
विकटंबनं बाहुधरं निहारे पलावंतनी
रंग हीरं गुमांनी: घनंक धरनीचनं के
छूवांनी उरं लेर लगे परंपार होइ गिरे
नर वाली कला चुके सोई वह कंघ फिर
बांन बंध षुलावे: परे मुंडधरनी सुरुंड
नचावै: गुरजे वहे सीसरी हुसमांनी: सि
रं होय चूनं विषूनी जवांनी: वहें मुदगारं
मार धारंत छति: परें पील मीतिवार घ
रनी विरती करेवार हाकं कहारी करूरं
करें मार मोतीयर चकचूरं: ऐसी भांत युध
कीयो कन्ह भारी मिल्या मिल्यो ध्यान ग्रमा
न षुली रुद्रतारी १ दूहा: कनक कटक की
न्हो कहर: कर कपरी दल मांह. भटक
वीर भगे बली: कोउ पलटे नांह छंद भुजंगी:

करतछ धरती मिलावै : कहुं भाव साधें
325 कहुं जाय मारे कहुं घाकवीनें कहं कोप
धारे चहुवांन बलसो कीयो पील कां
नी जुध मंत्र बोले संकर भवांनी : हंकं
हा कबके रह सेन सोइ बजाखेवर लोह
निरमोह होई करे षंड डंधटं घावधारे
विकटंबलं बाहुधटं निहारे पलावंत ती
रंग हीरं जुमांनी : षनंक धरनीचनंके
सूवांनी उरं तेर लगे धरंधार होइ गिरे
नरवाली कलाचुक सोई वह कंध किर
वांनबंध भुलावे : परे मुंडधरनी सुरुंड
नचावै : गुरजे वहे सीसरी लुसमांनी : सि
रं होय चूनं विधूनी जवांनी : वहें मुदगारं
मार धारंत छति : परे पील मीतिवारध
रनी त्रिरती करेवारे हाकं कटारी करूरं
करें मार मोतीयर चकचूरं : औसी भांत जुध
कीयो कन्ह भारी मि मिल्यो ध्यान ब्रमा
न भुली रुद्रतारी १ दूहा : कनक कटक की
न्हो कहर : कट कपरी दल मांइ : भटक
वीर भगे बली : कोउ पलटें नांह छंद भुजंगी :

कन कोप्यो तबें कीन जुधंचवै : घायसूधा-
वली सर्व फोज हलीचाय कोजां गलै छार
घरनी महै : काय वजू कीयं वाय सेना
लीयं गायरागं जुधं घायदरेगुधं वीर
नारदनचै वाय कीय मचै : छाय सुरगं
रहे जाय हंसंन ल्यो चाय बोलें चरं ठाय
धनंधरं : छायनां धेनरं : घाय बाहवंर
छायानाबें दलं : ताय तेगं कलं · थाय
बीरबली धाय रीयं दुली चायपारे चरं :
नाय बधं भरं पाय दुरधलं फागवेलै फहं :
घायवजैवरं भाय देरें भरं मायन्यारीमलं :
ज्वान ज्वान जलं : सायकदलरं : वाउ
लीनें उरं धाय लीनें पगं हंसलगे मगं :
सेत कंपे सबै : कन्हदेवेजबें : दूहा :
कह पान देषो जबै : भग्यो सेन-चंदेल :
हनि हाथी हलकान के मुरमलो रारनठेल :
१ कवित्त देष पराक्रम आल्ह : कमंध
लोधनची बुलाय : ताल्हन बेग पठांन :
रूप मोरी बग बुलाय : लोलंकी केहर वेस :
कल्यांन वीरवर बोय धतो वरवेल : सिर

र सगर गुमांन पार सब सूरवीर इ
क वील होय पारा तरिय आदरीय:
380 धुय धवलमील पार व परम: गुकति
आस मोपर करीय: २ दूहा: आल्हन
डिलिन जायके संभ्मारां सब सेन:
सकल सूर सोरिकर रन मन आनो
येन: १ छंद पधरी: धावंत आवंत सं
भारि सेन: सिरदार च्यार वर कहो
तेंन: जो पंदराव हीर यंद लोय: एकलें
पलाय दल लष लोय: मोरी अभूर स
गर अप्रमांन: जादमां हुंइ बलन ८ ह्यो
पांन: मंगल चहुवांन तोवर समथ:
चीलुक केसर नमभर पंथ: बड गुजर रा
म रन महीं बार: सुकल हवं सबड समर
पाहुं नर हरिय गोंम कायथ कल्यांन
सेंगर सुबर जजल्हन जवांन वघेल सूर
पूरन अप्रसोर धगांसू षग पीरमाल तोर
लोदी सूधीरपहुयरें धामि इदल सुसोमवं
सी सुक्रम: गोतमजुम्मार फलहन पार जो-
कुल सु वघेल विर विसार भगवांन

सूर चंदेल चित्त : डोंगर लौदन दौवां
न रंत : जगनक भार जल्हन जवांन:
१८ ई सुर वांनीयोरोर पांन: कायथ सेनो
करम चंद : मकरंद और श्रीवाल दंद:
वरही सुंदेव कन कुरित जोर गोरवा
क्रिपा जुमानि अमोर वमोत गुत कुच
तेग वाह : अठ भई च्याह निमलि राय
गाह - भदो रासू गूपति गराय सूर क-
छवाहा रांमालीयेनूर गंभीर वेग अ
जोंन वाह : सूर की वसंत तिन समर
चाह : अनूर घस्यप सेंगर गूवाल :
विर स्पंघ केहरा आय काल : जरवार
जार कमनेंत वर धरराय चूर चावंस सूर
ऐते सूई कठ भये जोध : सांवंत सूर
पर करे क्रोध : परिमाललय समर-
थ देषि : सांवंत सूर सवन यन पेष :
के माल चंद पुंडीर जोय निठुरइ जैत
पजोंन सोय : डाहुल राव हमीर वीर
सलष पवार सजिव गंभीर रावत रांम
तो वरपहार संजमराव रन विष मसार

हे अततताइ चहुवांन वंक : नरनाह केन आ
३१८ गे निसंक : चौवंडराय उपर अमान : ७
परि कान लैनो सुजांन निडुर हाराय
चहुवांन संग : लषन कमंध दल दयो
पंग परमाल सेतलषन सुधाय : प्रथीराज
सेन निडर सहाय : भाई सु दोय वगमेल
कीन : गहिपरन हथ किरवान लीन :
१ दूहा : लोषनली परमालजु निडर डर
चहुंवान दोय सावंत आंडुरे : कामधज
सेन सुजांन : २ चोपाई लाष वजैचंद वंध
व नंदन : अरु है निडुर भतीजा दंदन :
दोउं वीर अराडुरे जंग है दल चंदेल
संभरी अंग है : १ छंद त्रोटक : भड निडर
लेषन लीह हवरं : चहु वांन चंदेल निरष
भरं . कमधेंज सु दोउं व वीर अरे बहु
लाज जंजीर न सोज करे हल कार
किय बल धार बषं निरषे चहु वांन चंदेल
अपं वर जंत्रय मंत्रय लाग उरं : बष
फुटय वीर पवार परं लगवार सतारुम
पार रुपं . मछरी वर जोरम कार सुषं :

लगे सेन पडुं षप षेल्न कियं निकलै
फन पंनग वार हियं : किरवांन जगे
बल वांन हथं : तरबुज मनो छर कंत
मथं : जग दाछ लगें करिगै छसहं :
दुलही कर कैछ अरावहं : इक लेथलरें
बर बंक बली तइआनत की सिरताजु
चली गहदंत सुमंत उपारलीयं : करि
पीलन डील प्रहार कियं : उपकाथक
पुंछ बली कीहयं हनवंत सुद्रोनगि
वै महीयं : हय के गहिपाय पटेकरं
उड हंसचले मिलि कं अगरं : गहि के
कर दोउ उपार लियं. अरि सेन स
मुरुस बंद हियं इल भांत लरे कमधज
बली चहुवांन चंदेल की फोज हली:
अप आप विकार करोल रुचं विकुरे
कर बंधव दोय जुधं : १ दूहा लाखन
निडर राय बहु कमधज दोय जवांन:
प्राहुं किये संगर सुकन : अमर सीस
अमांन : २ कवत्त : निडर राय कम
ध बंधु जयचंद सुतन कर लाखन सी

321 राठोर अनुज पंगान मांन लहि चहु
आनि चंदेल: मिले दल बेल सजि
भाई भाई विरचे सु वीर नीसांन वांन ज
जि पेषंत अनीय दोय घनीय लषि लटा
घटा घीरिये अगर परिमाल जोर अघीरा
ज वलि स्वांम कांमलोपंत घट १ लाषन-
नी ऊपरें भीरताल्हनषां आयो मो री
रूपज धीर दंदजादमो चलायो मंगलनी
चहुवांन: कुंवर उधांन नाहनर कुंवर
पालजी क्वार पोत चालुक केसव भर
वड गुजर सोनि कसर सगर राय
अमांन सम लोषन हमीर ऐते मिरनं
आये पंक कुमं सम २ निडर राय
सहाय: चले सावंत मंतधर कन्हजैत
क्वें मास: सलवनरस्यंचविंवकर पल्हन
धीपजोन बीरलो वर पहार वर पिले इले
सांवत रुध सामरो हजार कर रहु सेंन
न दिषय वनयन: धाय धाय जोर सूरध
चहुवांन वीर चंदेल ठिल: प्रथम लो
ह लीने समथ: छंद पधडी: विर

321 राठोर अनुज पंगान मांन लहि चहु
आंन चंदेल: मिले दल बेल सजि
भाई भाई विरचे सुवीर नीसांन पांन ग
जि पेषंत अनीय दोय घनीय लषि लय
घटा घेरिये अगर परिमाल सोर अथीरा
ज वलि स्वांम कांमलोपंत घट १ लाषन-
ली ऊपरें भीरताल्हनषां आयो मोरी
रूपज धीर दंदजादमो चलायो मंगलली
चहुवांन: कुंवर ऊधांन नाहनर कुंवर
पालली कवार पोल चालुक केलवनर
वड गुजर सोनि कसर सगर राय
अमांन सक लोषन हमीर ऐते मिरन
आये पंक कुमं सक २ निडर राय
सहाय: चले सावंत मंतधार कन्हजैत
कें मास: सलषनरस्यंचबिंवकर पल्हन
धांपजोन बीरलो वर पहार वर पिले इते
सांवत उध सामहो हजार कर रहु सेंन
न दिषय बनपन: धाय धाय अगेह सूहथ
चहुवांन वीर चंदेल ठिल: प्रथम लो
ह लीने समथ: छंद पधडी: विर

चीयो लोह लोषन सुधाय: तासीय
.२२ कोपि निठुर सु स्राय: वजाय बाहु
जीरजनांग सम्भिदु सेन उतंग वाग:
हलकार सिंघ कलि कार दोय: हनवंत
सक पीठ वक्र लोय: लषनजपत वंजरंग
वीर निडर स्रराघ सक्ति गहरि डुंका
र सन्य बलकार लहाक: त्रिहूलोक
मध्य चढि लीव धाक: विकरे वीर
बीने तबागिह मंगल तुरंग सबदीये
ठाहि पारंत दंत मारंत पील: धारंत ते
ज स्रात तेग डील: गहि सूंडि मुंड
फेरंत पाह: हयलेल पुछ हाथि निगाह:
हेवर उठाय पटकंत भूमि स्रसवार देह
होय फोंक झूमि वाहंत बान बल
बीन एक: तुटंत एक फुटंत फेक: छूटे
सबं तुकें सकल कंद धरनी पताल
पीर तुरल दंद: कर सेल बेल वगमेल
होय निकरंत पार फनिनाग लोय:
दहु तेग बेग लागि कंध मुंड: फररंत
पिंड धर परंत मुंड: लागंत करारी

३२३ हेकवार ऊंची अटारीके खुले द्वार रज्जं
के बसन पीटंत कोप: फन करन
नाग भीजंत रोष: वाहंत मुच्छ कारु
ष चोल: निकरंत आंख कै श्रोन ला-
ल: जाद मोद मोरी स्वरुप: मंगल चढो
आंन मिल मंगल रुप: बोयष तावर
मरहष्ष बाहि कुंवर सुधीये पोल
हाल सोनंगराय संगर सुलोज तालह्व
पठांन सजि समर काज: हजार
संग पचास मीर लाषन सुवीर सम
वंग भीर बाहंत तेग बिफरंत आप:
इक सथ होये दोरेउ ताप: इकलो चीयो
निडर सुचोज: पचोस सहस ~~स~~जै
चंद फोज चोवंत तेग वाहं हंत रुक:
लपटंत लाय ऊठंत लुंक: इकलो लषो
नडुर नरेस: दोरीयो कन्ह कथमास तेस
पै जुन ललष मिल जैत जोर नरस्यं घस्यं
प चलीयो अमोर कीन्हे सुचले सोवं
त चोज: रुकीयो आप निच पंग फोज:
खुलीये सु आंष परीये सु कन्ह: ऊठंत रोस

28 भय लाल ब्रन : सांभहो पिलो तालनके
ग आयो सु कन्ह परि केंड तेग : की
न्हो सह मंगल गरजि घाय दीन्ही स
कन के कंध आय भ्रमीयो कन्ह कर
वांन कोरट : पीछें सुहनि कन्ह कुंतजो
र : फुट्यो पठांन हेवर समेत : भेदी
सबरातरवार बेत : फिर दई आयक
पमारतनोर सिर परयो टुट उडियो सु
घोर हनीयो पठांनें सेनीग देषि चली
यो सु सजि सेंगर सु पष : आयो पजो
न सेंगर सु अंग : लगयब कुंत छाती
सु लग : पजो निदई किरवांन घाय :
दन्हो समेत सेंगर जपाय : देषी येरु
प मोरीये जोन : आइयो सतो ब
सावतरोंन मोरीय रूप मंगल पुहांन :
जादे मादेर चंदेल मांन मल्हन के
सवास मर सोय : अठ भईया आये सीउ
दोय : नारन नबद ठिरबा रवीर पंजोन
सीस मजव गंभीर मज्जकंत धरालजकंत मेस

३२५ कस कंत कर चंदेल देस: बाजंत वज कर सबर
सात मनो करंत अंत प्रबल निपात: पंजे
निको पलिये तेग हाथ मारीयो राय सगर
समाध: फुंस्यो सूदेह करयो तुरंग: घर
भई लाल रती सुरंग: जाद मांदद चंदेल
मांन प कहै मध पंजौ प करें मध पंजौन पांन:
हेवर समेत घर पीरयराय: फेरे सु सीस
करम सकताय: भजे ऊठ मयास समर
छांड उभो पंजौ नरन मांहे तांड कवित्त:
हनि तालन पठांन: कन्ह कटे सु ग्रांनर
न: सेंगर सेन गरु पमांन चंदेल परे तन:
माल्हन के सबदास पाल षरगह समसु
भव: करनाहे कुरमजोर जसले कस
वजुतव: बारह हजार रजपूत कढ
हाथी पंच सु देस दल: जै चंद सेन
मुर करि चलिये पवीय फोज सावंत हल
१ कुरो हाथी पंच तुरंग सत ऊपर
रजपूत पचास भई पजोंन सु मोरछ:
इतने संग सु पास र भगी फोज लषन
लषीय: ताल्हन आये कांम: हाक मार

जैचंद दल: बल करिके फिर आमह
चौपई तोल्हन परे पठांन सुं जंगह: पंच
परे सिरदार उमंगह बारह सहस जंगहि
न सूते हाथी तीस मतंग सु हुते सूर छे
राय पजोन सु तोई हाथी पंचमहाम
दपोह संगह परे पचास हवान: उपर
न कीन्हो चहुवांन भगी फोज पंच
की सोई सो लखन देखी द्रिग दोइ
नानी कहरित कर नैनां फिरियो स
बे पंग की सेना: ६ दूहा वांनी सु
नी सेना फिरी लखन कही निरार: चे
त्यो रन सूर आय के फिरे संमुहे धार
७ छंद मोती दांम सुनी दल लखन वांनय
सोय: फिरे रजपूत कसत होय: किये
अग पील चले सिरदार परो सब
निडुर उपर भार हजार छ सक्रन सुभः
जुरे सब आय रुपे कमधज: कछेरीया
बोबुन जोध जवांन मिचीयव गोतम है बल
वांन जुफेल जुय लियवेल गरेंद जुरे अठ
मय्या हुते नर बेद नारायण दास बीयो बघु

३२८ लार मुकंद सीकायप भीलीय वारलबे
नरनाह सुं कन्ह दुवाहा चले चले कयमा
स वीयो संगबाह : चले भरचंद पूरी
र सू सोय : महा भय निठुर कोरन जोय :
उते रूप लषन नांमीय सुध : बह किरवां
न जुवांन न हथ कीयो रथ उपर जेजय
पथ : भभत श्रोनज छूटिय तोप : करकत
ज वीय सूरन जोप : नरकय वांनर पिंजर
छेद : कर कय सेल दहु उर भेद : लगें बल
संगसुं पील गिरंत : सनमुष सूर उभा
रही दंत : बहे तरवार सुमार हीमार
करें किल कारीय जुग्ग निलार वहे
किरवांन परें सिर सूर करेव पुरोसदहु
बल सूर मिल्यो सग निठुर लषन ग्राप :
निरषही सूर निठुर सपाय : गही किर
वांन सू लषनरेस : दई किरवांन सो क
छिये केस : किरवांन फीबल बांर भग्यो
भर सूर क्रत सतवार गही कर निठुर वीर
गरज : दई तब लषन सीस सूरज हजार क
टुक भये सिर सोय : पर्यो धर लषन लषन

१२८ लोय: भयो घर मुर्छा निठुर राय: भि
रे घर लषन अंत सु पाय: गही करवां
न सुं किनर कोपि: चले कयमास रु
चंद सुजोय: उते सन मुष सु. बाबु वताज:
भये भगवांन हरोल सु गाज: जुरे दल
पति लिये किरवांन-चले नरबद सर यन
तीन: मुकंदत्ती कायथ आग सु होय:
हुलो बगली दल पंग को मोय: मिल्यो वर
कन्ह पुंडीर सु चंद कोरीया बाबु वरो
कीय दंद: उते भगवांनीय गोतम गा
ज: नरबद और नरायन साजि: उइक
सांगसो कन्हें न कोय: दई भगवांन के
सीस मे रोप: भई सिर पार परयो घर
मध उते चल आयो बाबु अरबुध
नारायन दास नरबद कोप: मिले तह
आंनी के किन्हर जोप: मुदगर कन्ह पै
तीन्यो ने बाय: गही तब कन्ह सुप्यो पिय
पाय: गहे तब कन्ह तीन्यो चरन: पटकीये
लकरि उले घरन: भये सिस्तु नहय समती
न कीये निरजीव बती बप हीन: भजी

जैयचंद को सेन नराट कीयो रूप जाम
३२९ निठुर काट दूलो: लषन सीरन पोढीयो:
नरबद ओरनरेस: पर घायल निठुर क
मध दो अठ भय्या तेस: १ चोपई परेकठे
रील बाबुजंग है: अरु गोतम अगि
वांन अभंग है नरबद ओरन रायनकीट
व: पंग कांमरन तांमउटिव: २ कवित्त:
दोरि दल पति वीर वेस दाछन दलभा
रे लषि कायघ मकरंद: चंद पुंडीर
अधारे सनमुष हुवे श्रीवांम: हुंतो
बगली दल सोई वकर लेष नितर वार
देत सावंत निबाइव: उचरयो इष गिर
जाल मुष: करु ष क्रोध सनाह लीय:
जैचंद लोन चरलीस षीर: प्रगट हसमर
मिलिय ३ छंद भुजंगी: पील्यो वंत दल
पति सनमुष सूरे: गही तेग इ पंसम
मधं कस्वरो: बीयो जंपीयो जोध मकरंद
वीरं: अपारे मंडे वेस पंचारे गहीरं: हल
लं कीयो नोन पंगान तबं: भये वाज चहो
आनंदलरो कसबं: गजे नाल गोल बंदुके बरके

घनं घायरं अंगजं घंघरके वहें नीव
330 कंठार कंतीर सोरे लगे अंग अंगंमनो
श्रप कोरे मिल हथ हथं विहथंजुवांनी
किधो थाल लं नहोरी खांनी: विकटं वहय
गंघटं सूलगी: सिरं कारी अंगेहय दे ह
पगी: झले झल झके झल के झटके
घरं चुरीय चाय अघाय जटके ठव के न
ही सुरज जपिलोह आंचै टटु के परे
टुट अंतगनांचो विजेई सडोरु सुन
सुरनदं किधो पिंड कोरं विहुमांनन
सदं इलें चंदछुरीर मकरंद देषै: अमरं
मुजाते गवचनं उचे वै कह्यो चंद कायथ
पंग केरो लष्षो अजिब्ब गांस बे सेन तेरो:
इतै चंरम मकरंद सुष म्हेल कीन्हो:
दहुं हथ करवांन बलवांन लीन्हो: दई
चंद के सीसपे बीस बांनी किधो बीज
आकास की षंड पांनी: लटु के स चंद
घरा मेर छोयं: लषो वीर के वास बाजी
सुलीयं दई दोर के मास मकरंद सीलं:
करी आय घायं सुं देवी सुसीलं:

परयो देष मकरंद दलति घायो: मुषं
मेल कीनो कर सेल लायो: हन्योत्र्या
331 यकें मासके श्रंग भारी वरं मेदश्रंगं
नि हंग करारी कढ्यो सेलके मौंस
हथं गहायो: मुष मेल कीन्हो करं
सेल सायोह हन्यो कायध वेलकध
भारी कवी जीत चहुवांन परमांन
भारी चोपई हनि मकरंद कायध
जंगं दलपति वेंल दवन कीयश्रंगं
जहां चंद घायल मुरझाने भई जीत
कयमास सुभांने तीस सहस लषन
के संग है: समर मांझ परे कीटजं
ग हैं हाथी करेलीस ऋरु पांच बोले
चंदवचन सब सांच: घायल निठुर
राय अचेतं: बीसठ परे कमधज खेतं:
कमधज कुमक कांमसबि आईक
तें दई चहुवांन अचाई दुहा: आये
लाषन कांम रन उचरे साल सुभाय.
हम आवंगे कांम सब राजचंदेलन
जाय: १ चोपई उचरे अपाल्ह सब

32 संगी पीथोरा नी कोज उमंगीमा
रे लाषन तीलन सूरे वाय कनीर-
वीहे सूरे जगनक भाट बुलायो आगै
वायक कनें कननज ही जागै लाषन
तीलन वचन उबाहे पीपल जपल
चगन सोढाये। कवित्त उच्चरिय आ
ल्हे सो वचन सुनो वखानदित का-
मेह: आय जुध कडीयव जाहु जी
वन चर मीनट: तुम करहें संगतास:
कोंम आवें घर काज हे तुमहि-
कालंजर जाहु मिलें पर मोल समाज
है: कीजीयै सोवल तन जोमतिज
दंड द्रव्य दे माषियव राषीयो पटोला
सहुमा: नगर महो वाराधिव: २
चोपई उच्चरें बनें वखानदित लोउ
सुनीयो आल्ह श्रवन देसोई तुम
रेषत पगन तन षंडो संभरीया
कीलेन विट डो लाषन तीलन
का। मन सु आये अरु मंत्री मकरंद

333 कयाये आबें बना कर ढील न कीजै : निरभै
राज स्वर्ग को लीजै : छंद पधरी उचरयो
बलमदित सुनो आल्ह चलये जंत्र छत्रीन चा
ल : लीजीये वाग सब मोह छंड : सुरना
लोक भेदो सुतंड : सुनो बेनं आल्ह उदल
बुलाय : दीन्हो सुबीज भारथ बुलाय :
केसवादित चंदेल सूर बोपप वीर परमा-
ल सूर कोपियो राय सल गोड लोल
इ सरेल दास लोधी सुताह : मालहन बोलि
भोपति रूप बोलीयो वेसनरपाल रूप :
रुस्तम जांन पठांन पाय : मालहन
वीर छत्र साल आय : सगले सवंस
तोमीसरद जगते सजाय गोतम मगरद
ब्रोहिल परमांनद मांननांम मायर मरद का
पघ तांम : बोलीयो गंगवानीयां परम :
जागनक भार धीरे सु धरम जल्हन बोल
बिय बंधतांम : मिलिये आय परमाल
कांम : सोनासु साठ हजार तोल उचरें
आल्हजिन संग बोल : कनवज थांन
दीय कुमक सुध आये सु कांम सावंत

३४ जुध लाषन कमध्यताल्हन पठांन:चंदे
ल लोन कीजें लाल: कीजीयें जुध
अवध विसाल:लीजीयें लोहड़ कमंत
होय: चाहो सुजीव धरि जाहु सोय:
१ चोपई सुनी आल्हन की बांनी भा-
रीय: पुरसीदल मै सेंन संभारिय एक
मंत कै जुरि जुध न कीजै: छत्री धर्म
काज जीव दीजै १ दूहो: आल्हन मं
त सुनियो श्रवन: चित दे सेन बेल: आ
जबरो सूर अछरीय: नौन हलाल चंदेल:
छंद भुजंगी: कहि वित्त आल्ह सुनो
व्रमजित: धरो बत बिलंलहो मित मित
अतुल जुध्यं सांवतां लष भारी करें जुध
परमाल नंद विचारी वयं बोर सं राज कु
मार सोई महा तेज चहो आंन बलवां
न होइ त जो जुध सावंत नृप संग
जावो पछें राज परमाल नीकें जमावो
मरं भार रजपूत स्वांम हित कारे किले
लोह अंग निहं गंह कारे धरे धर्म सीस
सू छत्रीय सूरं तबारंत स्वांमी अबारेज

325 हूरं भजे रजपूत धनी कांम आवै
ऐसें रावंत नर कग ल्है पराये अबें जाहु
संगं कवर तात दोइ मरें देस काजे
समाजे सु लोइ सुनी कवर वांनी व्रह्मा
दत सारी तब आल्ह से बेंन बोल्यो
हकारी धनी लोय धरतीन के भोग भो गै
मरें नांहजाते हवें सरब लोगै नही
बीज रजपूत को तालि मांनै लीयो नार
फिरती सू संकर वषांनै सुनी व्यालवां
नी वडं गुम गाई सबै लोग मांनी
पुराननि बताइ चोपइ जा धरती को
भोग सु भोगै जातन मरें नही को लोगै
सोरां नीनें फिर तो लायो वेद व्यास स
निरतोय हकीयो: सो रजपूतन ग-
ति क्युं पावें जमको दंड सीस पर नावै:
चोरासी जोनन के अंतरके क्रम परदेही
दर दर भटकें १ दुहा: राजा धर जातें मरें
करें स्वर्ग को भोग दुनीयां मै जस बि-
स्तरे हसेंन दुरजन लोग १ जा धरती
को षायकें मरेंन जायें कोय: अंतका

३६ ल नर कह परें जगमें अपजस होय:
चोपई चरतीजाद सोच रही चनी
होय चनीयापन करही: अंत काल
वह नर कड परें ताकी साख व्यास मु
नि भरें २ दूह: उदक उतारत नांमरें
ब्राह्मन यो गी भाट जीवतचवु भरकत
फिरें वडेनर कमैबाट ३ कवित्त: कहत
ब्रलादि तब तुम हे: आहुन सुनली
जिय: करहु पेजपनचीर मार सावंतन
किजय: करहु स्वर्ग अछरीय हरोचहु
वांन गर्व सब चरहुई सगलि मुंड
सुर मंडल भेदोतब: पमाल नंद इ म
उचरिय षंड बंड पंडह करहुं कछहे
सुदंतहस्तीनके मल्हनदे निरमल करहुं:
छंद मोती दाम: कहें ब्रलादित सबें बुला
स: सुनो सब सेन चंदेलन पास सुन्हो
उच वांनीय उदल आल्ह सबे चलोजोध
छत्री धर्म: चाल: बुलायव केलवदेत चं
देल: करं परिहार सोचो धजुमेल: लीये
राय सलीय गोड बुलाय: मिले बरंई सुरं

336 लोधीय जाय : दीये सब गोपत मल्हन सूर
बुलाय बबेलनर बदनूर लीये चहुवांन
नर रूप गहीर दीये दिसि वांईइये गर-
भीर रुस्तम षांन पठांन दलेल : भये स
म लाल सुभलन गेल : सकत सुवंसीय
सोम विबुध जगतीय गोरीय यसम सूध
पिरोहध बे परमा[illegible]नंद सूर दीये दिसि
दाहनीय दल सूर लीये भर माधव का
पथ चाल भयेवर वांनीय गंग उछाह :
जहां मिल जलन भार विकट मिलें
दल देहं भंग सुभट : कियो सुचंदेल
ले भरसोय : लीये चष कोयन लाज स
लोय : अगे भये उदल सावंत हेल :
बर चक्र पांनी बघेल सगेल : दलांग
हलोत सुजां चरि भार मिल्यो जगन
कसूभार रूभार दलां उर दाहि मांडाहर
दीन : इलें सिरदार हरोल सु कीन : किये
वलादित सुं कंवर सूर दलां सिरमेर सू
ओल्हन सूर अमांन सुराय पवार पदमे
चले सुध स्वामत चालत धर्म सब दल साट

हजार सू पूर मिलंरन संग अभंग
सू सूर चोपई सात सह चंदेलसू
कीन्हे अरु दस सहस वांम दिस दीने
इग्यारह सहस दाहने सोइ आठ ह-
जार हरोलसू होई दूहो: चतुर वीस
सुनि गोलनै ब्रह्मादिलजहां आल्ह:
साठ सहस सेना तबै हलकारी
ततकाल १ छंद पधडी: हलकार आल्ह
सेना सपूर सब कीये जोध आगेज
रुर सिर बांध गिल कासिला सोय:
जुरत्ती सिर मंजरी मेल्हि जोय: मोजा
सू भरे महोर उसपूर कीय मूरन
साज कवरह कसूर हल कोरै सेन
सब ऐक कीन: अप अप जुध नर भये
लीन कंगल सू अंग सिर टोप लोय
प्राचीप छांल मिल छांल लोय: आगें
सेन मिलिव सागर समांन: कुरीय
अग्रपय मंडि कांन हजीर वीसउदल
समाज: कुदे सूजंग परि उमंग साज:
सहसहस कूदि सावंत सेन: उलरे

धारिव बियहरस्तोव: नरनीह कन्ह मुडीर
चंद प्रजोन जेत भौहा सदंद: गो यदु
३३८ वीज गहलोत सूर कनके सम्भदगुपि
उमंग नूर संजम हराय हाडुलह मीर
कुंवर पहार हाडा गंभीर नरसिंघदा
ह सामंत कीन: इतनेंन सुभट हय छंड
दीन: अदलिय चक्र पांनीव वधेल:
गाहिलोत दला भोपति मेल रायस
ल गोड नरवद वेस दाहिमा राय डाहर
समोल दसमथ बांन पठोन संग: चवर
सरुप नरकरि उमंग: सगतेस सोम वं
सी कुमार जसले ल गोड वास मर भार
मोहिल परमानंद सत्र साल: जगनक
भाट विधां विसाल प्रमोंनराय परि-
हार सोय: जल्हन भट जोर वर लोय:
भनु गाम दोरया बिरचचार इतनै कूद अ
ल लार हजार बील ठाकुर समाज
कुदेल जंग कहे पहर साज: उतरे जोध
धोउ रिसानं उदय उपपई धवर करलग्रांन:
उत सग सनील संघ रुपे पयाल धर

सागर बंध छंडीये तुरीय मंडियत्नजूध
वंह सेस बुध सांवत कूध दूला:उदल
कुदे छाडि हय.उलें कूद सावंत:
नौन वधास्यो सीसपरि कीयो लरन को
मंत १ छंद त्रोटक तजिये हयउदल
किन्ह तरंग गहियो किरवांन सुढाल
करं उमगे चहुवांन चंदेल रंन: श्रप
प्रेप सु सेन करायहलं: गजराज
हरोल निपति लिलगी भर भादवजां
न घटा उमरी: श्रतिउजल दंत सुमत
संघे बगुला घन मैजनु पंति बंधेवर
लाल विसाल धजार मनी तरलेन
सुनोप किये रन की गहि दंतउतार ही
मंत बलं करइसनु भनिय कंद फलें पट
केगरु पोगर पांन करें हनवंत गाव तणा
निगरं त्रिहु चोवर कन्ह श्रमांन बली श्रबदे-
ष चंदेल की फोज हली पीलियें श्रतिउ
दल कोप किय:अमडे वडरावत लियं:

381 छंद मोती दाम करे वप दाव सुधाव: समारि
क्रिधूचन केटह कंठ: कवार वहें करवांन
प्रमांन सैहघ पेरें घर ऊपर लीत समेंघ:
करें पकवांन करंकर बुछ परंकर ग्रीम
बहु घार फूर: गनंगन जूथ अपछर घाय:
घनें घावन देय घुमाय: नरनर लोहन तूर
सपूर चरेंचर चूंट यता सनचूर छलं छल
बेलठि झेल हलार जुरंत जुवांन लरे दलभा
र जलं जल तेज भला भलझेल टरेंटरर थं
अपछर पेल: ठहै ठठ भीलय पीलय पाय: डरं
डर काय देष डराय: उरकिय डुंड निरष
य नेंन: तर कय तीर बर कीय बैन: घिरंदुव
सैन गुरेकंतनांह परंबर होइ दहूं दल मांह:
घरंघार घावत आग हसूर मरंमर मारत
भेदत भूर बर बर चेदल आवध छूट भर
भर भाजित नाहिन सूट मरमर छेद तिमार
मुष्ठाल: जरजर नाचत धायज टाल: उरं
उर कुटत संग सुलग सुरा सुर देषत षेलन
बरा षरीकत पांतज भेदल दोय: हरीहर
वांनयअचारि सोय: पिलेंइत सज मरा

सहाय : उलै गहलोत प्यारउम गाय : मिल्यो
384 मुष आय मरं दह मेल : तजी फिर बांन
गह्यो कर मेल लगाय वलं जम राय सेसा
र सल्यो तन मारकीयो फिर वार दईदलप
त के लीस मुदोर लियो सिर मेल सदासि
चगोर लष्यो तब भुपति किन्हीय रीस :
दई तब दोर के संजम सीस : भूम्यो
सतवार सो मूर्छा मांन : चल्यो नर संह स
हायक तांन : दई नर संघ उरज की लीस :
पर्यो गहलोत मिलो मनि रीस लषे चक्र
पांन नर संघ सोय : मिले बर बंघ स
मधीये लोय : किये भुज पांनव पेल
प्रमांन : इतें बंध दांह मायां इसमांन :
लष बंध होय जुरे मल जुध गिरंधर
दोईय वीर विबुध दुहुं जम दाढहु उर
बाह : दोउ चक्र पांन सु पंजर चाह
दूहा । चक्र पांन रन जुध तजि अ
हुति फोज पमाल : तब ब्रलादित
कोप के कहें वचन मुष ज्वाल ।
ब्रलादित हलां कीरव बाहुर दल

३८५ मै आयः चरिय संग्राम धम आल्ह सिर
रनीपर अनी वहादुर हीने सावंतनिल
षन रनः तालन प्रबल पठांनः सठ
स पचास षपाय जगः कलिमें किये
कहांनः कवित्तः मरनधारमंगलहः
विर व्रह्मादित आयवः भजे नृपति पर-
माल देषि दल धर्मलजायवः कीट
कुमंक पंगकी कमध लाषन जुठरिजं
गहः तिल तिल तुटयवः मुरि किन्हो
नहि अंग है तालन पठांन विनसिस
रुप अतुल पराक्रम कम चुक्रीयेः
भाजंत सेन जीवंत मो अति मो दुष
सालंत हियः २ छंद पधरी परमाल
नंद हल कीन आय विहलीयो कुवर
मंगल नजायः हलकार सेन सब
एक कीनः आलहन सीस वड भार
दीन सगतेस सोम वंसीय सूर बरगह
वार सत्रसल कस्वर वरछी सूरदेव कृत
सिर चिचूर डोंगर सीदल दोवा गम्भर रा-
ठोर राय छिल कोप अंग तोबर अमांन

चढि मन उमंग सिकवार सूरजन
388 चर्म सुध: वलि पिंड गोर केसव सु
जुध जादव सुभि लरिन बाध सोय:
सूर कीवसंत बलि वंड लोय: जल्हन
सू भाट अति तेज जाय: कायथ
करमचंद अतुल वाय: वांनीयो
भारमल बुधि अमांम: इतिनें कीन
उदल सांम: हजार वीस असवार
और गजराज दोय सत मंदलि दोर
पच्चास तोप वड सहन खेंच :जो
लान घाय मन पंच पंच: हजार पां
च दीवांन सथ: लषि विषम बांह
सावंत वध: उत कन्ह चंद पुडीर
जैत: कनक वड गुजरलषननें त औ
हां चंदेल परमाल पीय: अत लाई कोप्पो
अरिनजीप: संजमराय धरि दीयजुध
तोवर पहार भुज धीर विरुध अचलेस
अंग उमगे सु जंग: नवल्हेस आल्ह रन
मन उमंग: पंजोन मले सीताल रत:
कोपंत जोंनर धूमाय दूत दूहा: पंच

345 सहस प्रथीराज के हर वल कन्हस
मार लबें वनाकर सेन जुरउदल वी
स हजार 1 दोउ वीर रीसाय कें लबे
छत्र कर मांहि वगउठाय वगां क
ढिव: चढे मंतिन मांह र छंद हनुफाल
दलमिले दोउंय संग: वजरंग वीर
उमंग: उत कन्ह हय वर डार आए सु
वीर हंकार दस सहस उदल मोइ उतरें
सु हेवंर सोय: दस सहस हेंवर र ठ
जन तोप बांन छुट हय छाड तीन हजार
चहुवांन किंनर लार असवार दोय सहस:
रीह जुठ रापर हंस दिष पिले पिले लोह
फिल्हे सु कन्ह सुभाह कढि दंत पंतिनपांव:
पली मील कंदल तीन गहि सुंड फेरत
गांह हनुवंत गिरवर ठांह सुयं जुंछ पर
कत तीन: बलदेव पुतह जांनी हय
फकर बाहत फेर असवार जुयनि हरें:
मगदुंत पीलन कोट मांजीयो कन्ह
र जोट पेले सुदल मधि हुय: जिम
लंक वंदर जुथ: चूर कीयनी चंदेल

बल देष मेल: मारे सू पील मतंग: ॰
घर परे परवत श्रृंग: कवित्त: कन्ह
कोप चहुवांन: हने हथी मतवारे
काढि दंत जुर बांह डील डुंगार से
मारे हैवर हय समोह ठाय दलदि
यो समेनह भगीय फोज चंदेल: देष
सावंत निनै नह: सुर कन्ह फोज उदल
लषिय: भयो वनाफर कोट रन: सोलो
टकरि वदुर जन चमर रन भेटन सावंत
पन: १ छंद मोती दांम: मिल लिषत
फोज वनाफर वीर चल्यो सनमुष मरन
सुधीर करी पर दछिनां श्रालन लीये
सब रावत संग समाज: चल्यो मोम
वंसीर राज सुधीर पिल्यो बरही देव
वक नग हीर पिल्यो दल डौंगर सी दोउ
बांह मिल्यो सू श्र मांन के तो उरनीह
पिल्यो राय सलरा ठोर मरद पिल्यो स
नसोल सु बांधि जरद पिल्यो सब्र वार
सुजन सीह पिल्यो दल गोरु सु के सवबीह
पिल्यो दुरजन सू जादम जोर सूरबीयवीर

३२८ वसंत समीर पयोदलजल हनभाद हुलास
पिल्यो क्रम चंद सु कायथ जास: पिल्यो
भारमल सु बंस बीरिष इतेपिलउदल
संगगरिष इतें यह छंडीय कन्ह समथ
उतें हय छंडीय उदल पथ भजै बलग्रा
वथ सोंवथ बाहि: डगमग कायर
धुकत पाहि करि वक मांन लई दोउ सेन
मरषीय कुंडल कीनीये सेन: चलावत
सेलढि जावतगन: मनो अहि बोबीयहो
यम गन: चलावंत है बीढ दंत दु बाल
करें बप प्रांन सु उबट राह वेहै गउबून
सुल गेही हीक: मनो अहि मंतीय जीह
सुली क: बहु वहु तेसरनाव केनेह:
वरषें ही बुंद प्रेंत कमेह दई कर उार
कमांन सु तेन: गहे कर सेल लबेद हु
सेन: कर दहु सेन अन्यो अनभार दहु
प्पार होत है फिजर कार लगावत तो
मर जोमर जोर वहेरु धिछ बिद हुंउ
लंबीर लगे उर श्रोर सगतिय सर मोविष
प्रसीय लषि करूर प्रन्यो प्रन सेलकीय

पीयमार तबे दहुं सेन गही कर ठार लगे
कर कंध सुबंध बुलाय मनो जमराज
जने उंवनाय लगे सिर ऊपर करही टोप:
किधुं कीयजो पसरसतिजोय: वहें किखां
न सु कंधर फाक: रुपे धर डड करें सिर
हाक वह सजि सूरन के सजनेत हकारत
राह किधु कीये केत: जजी किरवांन लई
जमं दा ढ लगावेंही कं कर छल सु गाढ
बगत्तर पार करें कर जोर मनो धन भेद
ऊभी दुज कोरं लगावत बंजर पंजर पार
किधो किय काल का दंत निवार च
लवत सं कुल केर जुवांन घुमावत
ष्रंग नि हंग क्रमांन: चलाय सुरज सु
पील निसीस: मनो गिर तोर पुरं दर
दीस: लगाय शसूडन सीसन तांम मनो
दधि फोरे गुवा लियथा स्यांम: पला
वत केहर के नष पेट बछसपल फार के
डारिये वेट: लगावत रंजक बगन दांन:
कीधो कीट पंछ सुनागनि पांन:
इह विध ऊदल कन्ह लरंत: महा सुध

३५- छत्रिय धर्म धरंत : ठठ कीयें सेनं उलें
चहुआंन : मिले दहुवीर पर गर ग्रांह :
दू हो : दोस्यो संजमराय रन उद लि
उपर आय : सगंत सोम वंसी मरद
झेल्यो विचरि साय १ छंद भुजंगी : वि
ल्यो संजमराय संगते सराज लीयो
विचही आय जधग साज रह वीर
गजे वजाये सु बाहुं रहुं सुर मंझ्यो सु
मनं उछाहं : करं काट बगं उमगंन्च
लीवे : कथ्यो धर्म सीसं विकटं मिलावे
झटं गट जोगनि लोहुं भरावै : पटके
बाहु घाव घटं धरावे नटं जेम नाचं
त वीरं दुधारं छटके तुरी छाड षटके
सु पारं छलं बाल छुटंत सारं सजोरं
जरं जेजरं ज्वांन अमांन लोरं हुह वंदले
देष देषे हटके विकटे बहु छट कीन्हे ल-
पटे ठठके रहु सेन देषें तमासो डरु कांत
काजेत डोरुं उमासो ठठं कलरं टारटं फुट
रियं : ततथेई नाचंत साचंत मसीयं : रंकंत
जुगनि भैरुं भिषारी उमां कंत नाचंत

देहथ तारी ततथेई नाचंत इसं डरगो
३५० थरको दहुं सेन देषें मरगो : दलं दोय
हुके बलं बाहु दोई धरं वीर धावंत
धावंत लो ही नरं नेह छंडै भये नेह न्यारे
पुलषत बाहु अषारे पचरे फिरै नाहि
दोऊ फलै स्वांमि मिटे धरी मालहथं
परीपाप गढ हन्यो आय संजम से
लं समाही तबें वीर संगतेल किरवां
न छाही लग्यो संजम सेल ही कंसताप:
रुप्पै जाय धरनी कीयो देह दापं: लगी
तेग संजम के अंगमारी गई छूट
संग्या परयो भुम धारी परयो अंत
संजेस कतं लषायो : तहां गहर
वारं सता कोपि आयो ई तैं चंदपुंडीर
मैन लिषायो : तबै कोप कर वीरसं
न सूधायो लष्यो चंदपुंडीर आयो च
लाई गहरवार चहुवांन सेन्या इला
ई जपे मंत्र हनवंत सत्रसाल सो उ
गज्यो संघन दं बरं वीर लोई उलें चंद
पुंडीर देवी पुजाइ तज्यो अंक कीलि

करि आई लष्यो सत्रसालं विसा
३२१ लं बरिषं : चल्यो पीप परिहार भीमं
गरिवं चल्यो देव करन सुंहो३ सुछता
जप्पो मंत्र गुप भरे क्रोध मंता : कि-
ला कार मैरु सुलल कार आयो हन्यो
मल्हि षयेवं बली दीन पायो : उतं देव करनं
सला गेहेंर वारं उतै चंद बुंडीर पीपंसु
भारं यतै दोय परमाल के सुभट डायेति
नै उपरें चंद बुंडीर आये वीयो पीप परि
हार आयो सहायं लीये वीर दोउ म
करि वान वायं : करं सत्र सालं कमा
नं सुलीनः धर्यो वानलेसं प्रहरं सुकी
नं : लग्यो पीप परिहार के हिक आयो
भिद्यो अंगरंगे धरनी मिलायो : पर्यो
पीप परिहार षेतं अचेतं उठ्यो सैज-
म राय पायो सुचेतं : लष्यो संजमंराय
देवर कान ध्यायो सिसं आयसंजम के
संग न्यायो : लागी सीस तेगं भीर फार दोई
दहुं हथ फटं गही वीर सोइ कुमानं
सन बेंच सीसं बधायो दहु फार बेधी सु
धारन सुधायो : दूहो : देवी दीन्ही दोरकें

५२ संजम सीस गहीस लटकी फार नि-
रार बहुं सह्यो सत्रसलसीस १६७पै.
देवकरन रोरके: सीस संजम के दीनी
य: फल्यो सीस विच सोय ज्ञायनास
लगलीनीय सत्रसल सिंग तितौंन
हन्यो विहुं फांकन तीरह भयो सीस
साबुत लह्यो विच बालगही रहै सं
जम सीस विष सो विधिव: सत्रुसल:
कुं गुजरा कीयव: दहु हथ प्याय बली
श्रीफुल: कर विरही कांपै दीयव छंद
पध्धरी: संज मराय हनि सोम वंस:
रोपीयो कुंत छाती उतंस सगते स
रई करवांन घ्याय: परियो सपरन
संजम राय घाये सु चंद कुंजेर पीध:
आये सु सक्रि चंदेल दीय: तहां सत्र
साल असुर संग: बरहुसदेवनर के उमंग:
कमांन पकर सत्रसाल सुर दीन्ही स
पीप के हीय कसूर लग्यो कुलीर घर
फुर लोय: परीयो रुपी घर विरंग होय:
ता समें उठ संजम नरेस: फिर गई
मूरछा सर बतेस: दोरे सदेव क्रन कीयै

३५३ सीस : दीनी सुजोय संजमइ सीस:
कट गयो तीर लगानांके मोह तासमै
सत्रसाल तीर बाहि पीरहार तीरका
ये श्रवनवांस: विध्य गये सीसलग
तीर तांस : सत्रसाल काज किनीव
सलाम : किरवांन जाय दीय कंधतां
म : लगी सु कंध देवक्रन धार झुलजयो
कंधनो पुन उतार कीट औम सिनलग
सेल आय पाषर समेत हेवर झुलाय : उत
चंद आय मुष मेल कीन्ह : सत्रसाल
सीस किरवांन दीन परियो सुदुर मग
हर वार : सेवा डोगर सीगहि वसार
चलीयो वीर पुडीर मुष : दहुं हथ वीर
बाही सरूप लगी सु फिलम में मध्यिजाय
कीट ढाल टोप लग कमर आय : परियो
चंद धर सलष लिष चलीयो पवार सन
मुष तिष : मुष मेल कीयो सेवा लसूर
किरि टोप झिलम भकरि करूर तरवार
बांही पमार चाय : कट कर सुझीन
हय गई वाय : झुम्यो पवार परिधरि

२४ नि मधि देबीयो जैतनि निडूर प्रसिध
चल्यो सुजैत निडरनरेस: कुंवर प्रमां
न चलि जयो तेस: कमध्वज राय सल
बीय सहाय: चली थें जुवीरन समिक्षाय:
कीन्हो कन्ह उपर चलाय: आयो सु
वना फल उदलिचाय: दूहो: उते कन्ह
सम्ह आईयो: इत उदल सम्ह आय:
आप आपनृपजोर छई मंगल मरन उछा
य: १चोपई परि सगलेस सोमवंसीरन:
गहरवारश्रो करन करेतन: डोंगरसी कोना
न कीरव: सावंत निसन मुषआव
रिव: चंद पुंडीर परे मुर माय: ई
परिहार पीप गिरछाय: संजम राय
करे तन लिव: १ छंद त्रोटक: लषि निडर
जैन कन्हं चलयं कनके वड गुजर सेमि
लियं: लषि मोह चंदेल पजौन बली
इतने मिल सेन सनुष चली लषि उद
ल सेन सनंमुषयं: सगतोवर मोंन
बली रुंधयं: कमध्वेज सुरी वसतनी
चिलयं: सिकरवार सुरंजन से मिलियं

३५५

नल नंड सके सब गोह मिले गह जाइ
मंद दउ मंग चले सुर कीवर वीर वसंत
बने. गयजंलन भार सिभाज रने बग
ली जह काथध क्रमचंदउमग्यो वन
यां मर माल दंदं पिलयो तहउदल पाय
निसौ मर के बनि लौ फिरस्याय सौ
मुष ज्ञाग पचासक लोप कीर हराई
य सूरन जोर मरी हलकारकिस गोल
सुलोल मरीवड कोटजजीरत तहांज
करी: धरि ज्वांन सु वांन दई चिनगी:
दल सावंत उपर दोस लगी: रुषतो
पनि जोंमगिलाग दई परियेजन घोर
निहा वसही: खररायहै ज्ञत सो
र सह्यो: उदल कासर ज्ञंबर छोय
रह्यो: धुक के कर संजमराय परे रन पं
च हजार तहांज करे: हसती परती
सस मेरन में. कितने डर कायर वेस
नमे: फिर उदल देसहु वास दई सग
वीस हजार सुमार लई वली वंडकरे
निय मंड मरे बड बंड सु पिंड प्रचंड करे:

३२५ बिचले दल पीपल तेग लये : सब भार
सुउदल झेल लिये : कक्वांन हरोल
उद्दनी सुरकी लष संजमराय गिरे चरकी:
तहचंद पुंडीर पियास परे गुरमाय स
लोभ धार निधरे तब किंनर कोप क
च्योरनमै : मुरकील लषसेन दुवा करमै : किर
वांन गली हय छंड दयौ सनमुष सुउदल
पें पिलीयो : जउ जै तप जोन मिले सयरं
नर सिंघ पवार सज्यो गोहिर जहरा हुल राव
हमीर चले इ तनें भर उदल पेंज पिले :
उत वीर वंस तर क्रमचंदं वानीया वड
भारज मैल ददं : देवरारन डुंगर तीउ स है :
वडवांन जल हन भा कहे : पर माल
सुन्यो नृपजास चले : चहु वानय कन्ह क
उाज गये : बिचली जीय उापक
जूप गये॰ सुर्ग सुषल हो जुसबै ख्य बही :
मृत लोक क भोगत जोस बही कवत्त लिगिय
फोज प्रथीराज लोप वांन वांनन की
मारव : परयो सुसंजमम राय चंद पुंडीर

३२८

सुधारव: परेपीपरिहार परे वर गुजर सोइय: परे तीस सगपंद सहस है वर निरलोइय: रजपूत सहसदेव सु परे को जीवि चल पाछै भईय: चहुवांन हत्ती हांक्यो डुमरसि कन्ह वीर दारुन दईय: चोपई गुर की फोज देष चहुंवान: पिलव हाथी अगलतांन: कन्ह जैत हाडुं लिह मीरं नरस्यंघरा मलि ले सधीरं १ हंक सेन नृप आगे की नीय: चावंड काज आयस दीनीय: तुम परमाल पकरी गहल्या वहुं: मैं ऊदल को जंग पिलाट हुं २ छंद त्रोटक: नृप हाथीय पीथल पेज वरं सब सेन सके मिल एक करं कयमासर कंहय जो मिले सगरा डुलि बीरा वह मीर चले तह जी चयदेव अलंग बली विभरा कस छ्यावत धार अली तह पेलर हस्त मेल चले भरमील मऊद पमार मिले नृप ऊदल ऊपर कोप कियं: इत नैसि रधार सु संगदियं: उत देष वना कर

३५८ बे षुलयं : सग डुंगरसी दुय वा मि-
लियं : क्रम चंद वसंतरुजेल्हनयं :
सिकवार सुरंजन मेल्हनयं : जह मो
ज वना कर भरमलं : वषता ग्रजबा
बर कोप दलं मह कंम मिले भर भरत
ए इ तने मिल उदल संगभये : उत
कन्ह चलाइव कोप किय : उलउदल
बीर अपार थियं : विकरे जुवना कर
आंननयं : धरियै घनलोह विहंब
रयं : चहुवांन दबाय रोल लियं :
उत आल्हल आय सजुध जियं :
पिलयो भर भीर पजोन बली द्रिगदेष
चंदेल की फोज हली : पर के
गह हेवर भूपरयं : मसलंत पयाद-
न के पलयं कहुं हाकय वाकय वीर
मुषं : कहुं मीरत सायकलेमरुषं :
कहु सेल चलावत बाहुबलं : कर
टुर सनाह सु फुट्टरनं : विफरे बर
वीर पजोन इतें सिकुवार चलाइयाते
किं कर उर लगि पजोनन फुट परं

३५८ धूकि रावए जोनिन कोप कयं : किरवां
न सुरेजन कंध दयं : धीरयं सिर टुट धरं
न गिरे ततकाल वरंग निआय बरं
भ्रम पायप जोन गिरे धरनी फिर आय
वडो गर सीर मनी तिन ऊपर आय सु
जांम क्यो दयवातन सायक लायम
स्यो तिन सायक डोगर केल गयो
गहिके किरवांन तहां वगयो किरवांन
वटी कर जां मलयं : वयहें धग हाय
कें स्री सदयं : धुकलें दइ डोगर सीप
गमौ : धर धुमक जाय गिरयो मग मै
फिर चेत कत गदई सिर मै : गिर डोगर
सी दय वा धर मै दय वासर लूट
कमंध नच्यो उतवीर खुंद सरमाल
संच्यो वगसी क्रमचंद सु आयग
यो : धगधार धनीरन वीचलप्यो स
कसेन श्रीवास दुअं धर मै : फर कुट
सनाह कियो धर मै गहि पाय सुधीर
पटे छिधरं नर चुंन भयो सिर कुटबरं :
रन घायक बेंस सुभार मलं । पिलीपोज

२६० हो प्रथिराज दलं : नरस्पंघ सुदाह
मुदेष चष वर बीर सुन्यो धार मेसुर
बे नर स्पंघ दुई गुरजं सिरमै : उतसा
ह सु सांगलइ करमै करमांहल सांग
चलाइ उतै : बरकास वदुरिक डारि
किते नरस्पंघ सुधाव कियो गुरजं : सिर
तुट घरयो नियरयो सुरजं : भये सिर सेव
कटुक हरं रहें विघ मामति विजवरं दुहा :
जल्हन भाट निराट लष मरन सु नियरो
आय : सुनीयो सुतज सराज के स्वर्ग भो
म मनलाय : १ छंद दरसबला : कन्हउ
दल लषो नैन दोउ दब्यो बोल बांनी बरं
लिन हथं सरं कीन भारी मनं : स्वांम स
ज्यो पनं : जोघ दोउ चले क्रोध बोलं
मिले : इष बोलो मुषं घ्यांन प्रबालपं :
बांन चाहें बीयं : दुष सनादीयं : बार
लगें उरं पार पारंपरं सार जुटें सरं श्रम
लूटै बरं अर्ध चंद्र वहै : फाक सी संलहं
लेहस लागे हीयं प्रांन छे कबीयं सेल
बाह वरं ज्वान धरनी परं रुक वाहै कहुं

३६१ ताकू मारेंस हुं जमय दादे दीयं: प्रान कढं
लीयं: पंजंर मारीयं: पंजरं फारीयं: रज
कंनावते: सूर सूवाहते फोज मारीस
हुँ वीर का पेस हुं मार मारं कीयं:
उदलं विलसीयं: जल्हनं संगीयं भार
उमंगीयं दूलो: उतै कन्ह आयो उरई
इलेंस उदल जोध चहुवांन चंदेल के
मंडे सावंत कोध १ छंद भुजंगी: मि
लेउ दलं कंन्ह दोउ अभंगं: बिरचेस जोधा
दहं स्वम संगं जपें इष मंत्रं उमाकंत सोई
भवांनी धरे ध्यांन ध्यावंत दोइ उमाकं
त मंतं जपंतं सुधाये बिहुवार वांनेत
सनमुष आए मिली दिष्टि सु रिष वांनी
उच्चारे अहो कन्ह धीरे चलो जुध भारे
दलं पात साही सबे तुम जीते अबें
उदसो आय सबें बलवीते धने दिनपदी
सु अबें बंधाई: अबें उदल सो परयो बा
ल आई उतें कन्ह बोल्यो महारीस आई
सुनं नंद जसराज के वात सोई यहां गोड
ना नांही गढं ठांव जांनो: अब कन्ह

चँडुवांन सु जुधवांनो विरचे दलं वीर
६२ आवध वरसे महावीर जोधांन के आं
नगरसे: चलावंत तीरं सगती करारी:
लगे वार छती परें फुट न्यारी चला
वंत वीरं दही वीर वांकै ~~परें~~ परें फुट
धरनी दहुं सेन धांकें चलावंत सेलं
दहु वीर जोरे सनाहं बपु फुट डुटंत
धोरे: वहे तेग वेगं सुरंहकारे मनो
पत्र ककं कुलालं उतारे चलावंत फर
सा सिरं फाक होइ मनो वांटीये वटं
तर बुज सोई वहें अंगसीसं सु मारं
अपारं किधो कन्ह कोरं तद धिग्वाल
सारं: लगें मुग्दरं मार भारी सु सीसं:
करकं हजारं लटके सुदीसं चलावंत
गुरजं हकारंक हाकें: फी दोय दल
मांह दहुं जोध वाकें: लंगे जमदाढ
सनाहस छुटे बपं अले कालजें पा
रंज फुटे जगावत तहां के इरीन षवा
रे वरं कंगलं अंग उर जंग फारे इती
भांत कन्हे लर उर दोउ करंक अवटे

दहुं कोप होइ उलें कनकी मीर के
मास खायो नीच्यो राक चाठा सिरं सूर
ठायो लच्यो जलनें भारकें मास सोइली
यो विचही खाइ महावीर होइ इतें
टाक चाटा मुष मेल कीन्हो बलीज
ल्हनें तनि के वीच लीनो जही तेग दोह
दहं वार कीनो जबें भट विपरी लहुं
षग लीनो लगजल्हन हाथ की तेग
चाइ फिरयो चक चाटा सुधरनी मिला
ई वरंटाक चंरा सिरं स्यक बाहीलगे
वीरजल्हन परयो भीम खाइउतें खाय
कमास सेलं चलायो बल्ही जल्हन
बेत घरनी मिलायो परयो जल्हन देष
उदधि ध्यायो : बली कन्ह के पेंबग
नायो : भ्रम्यो सात वार सू कन्हंनरेसं
गह्यो उदलं धाय हथ सूवेसं भयेलष
बधं सू उदलिकन्ह : रतें खाईयो दोर
पर हार वन्ह . बली दुसरो वीर कें
मांस खायो उरंउदकें खाय सेलं लगा
यो . गही तेग कन्हं सिरवार कीन्हो

३६४ परयो ऊदलं तुंट धरनीत बीनो: रुप्यो रुड
धरनी सिरंहाक मारे भयो मेर ऊदल ठा
टो हंकारे ऊत ऊदज सम ध्यायो सम्हारी
बली तेग कमास के कंध भारी परयो मोर
छादा हमां ग्रूम ञायो: गह्यो रुंड कन्हं
धरनी मिलायो: हन्यो ऊदलं कन के मास
दोइ भजी सर्व-चंदेल की सेन सोइ १८
हा: ऊदक्यो नांच्यो कमंध गिरयो सीस
धर सूर हनि सेना प्रथीराज की एक
हजार सपूर १ चोपइ पहलें ऊदल कंह
घुमायो कमाल सिर गगन वतायो: त्र
तीयानं पीरहार नवीनो भए मोर छो सा
वंत तीनो २ दूहो : तीनां मिल कर मारी
यो रीन जसराज कुमार मारे भर प्रथीराज
के सिर बित एक हार ३ कीवत्त: सुनि
व्रह्मादित वत: कांम ऊदल रिन छा
यव व्हेहर बाल सब जुट सार सावंत
नषायव: सत्रसाल सग तेस: परेयो कर
न प्रमांन हे : सुरजन डोंगर पीरव पर
वजलव नरन पान है परपरे पील सें

३६२ दोयरन: दस हजार हेवर बहर मुष
वील वाह आल्हन करहत: कंन्ह क
ट क कीन्हो करहर चोपई ऊदल को
वीर रन पांही छत्री धर्म धरे ऊर
मांह वत्सादत्त बोले रह वां नीय: सु
नै भोग भोगव वसन मांनीय:१ छंद
अर्धनाराज: कीयो कुवार आल्ह यं
चंदेल चील चालयं: हरोल पील की
नयं: अरिब मुठदीनयं: तमक वाग
लीनयं: स्वांमित धर्म चिन्हयं बनाय
फोज भेदयं: विचार आल्ह योजयं:
मेले मरद मार के अनेक दावदार के बंध्यो
गरट जोलयं: विचें कुमार हरोलयं: चल्यो
सु आल्ह हाथीयं: लीये सुभट साथीयं:
ऊले चलीन चोलयं: मरवमेल मिलियं:
सबद साज चोलियं: कुमार वीर पिलयं:
के मास कन्ह जीतयं: हमीर जुध नेतयं:
गंभीर कन्ह केसयं: मिले सुवीर वेसयं:
हाडुल राव मन्हन· गयंद राज जल्हनं: ५
हीर राज तुंवरं: चले समाज कुवरं:

५६ उदाहर आल्ह कीनयं वनाफरं प्रवेनीयं: सुरगभोग आसयं: बाल नष गता सयं: बोल्यो बयन बाचयं सुन्युं चहुवांन सीचयं धरमजुध कीजीयै: वचनका प लीजीयै: बुलाय जोध जोधयं: अधर्मजुध छडियै: सुधर्मजुध मंडियै दुह: उदल कों मसु आइयो: दई वृगर प्रतिहार अबरन धीर प्रमाल को सब तेरें सिर भार १ छंद भुजंगी: परयो उदल बेन सो आल्ह जांन्यो: कीयो क्रोध अपुंगरनं मरन ठांन्यो: लीयो नीर हथं बुलयो वीर वांनी: करीपजन मैम दा अंत जांनी धरों इस मुड गल आस मेरो उधारो अबे नींन चंदेल तेरो: इसे बोल आलन सवकुं नाये: धरे स्वांम धर्म मरंम मध्याये: चलाए दहुवीर वीधे गरमं: चलाये चमके बली बाहुथ टं: करें षंड षंड निसुड निधारे: मिलें वीर जोधी करी कुन फारे मय केन सु उनि टुटै वरछी: लगें उक वीरं परे

३६८ वे तरछी : सरदंघराजेम गाजंत गाजं : बली बाहु तोरं सवोरं समाज : घराले न वीघी दहुं वीर घाये : मनो वृवी मछाह घनं मंड आये : दमके उरं सा ग लगे घमोरा : उरं फुट सनाह फुटं त चोरा : मिले सूर सूर सपूरं अचा रे : गहें सुंड दंती सुमंती चिकारे उ तें कन्ह पहुवांन कमधाये : पचारे करे ते अपारे मिलाये : कहुं के भुजा तोर जोर उपारे किते इक जोधान के सी सकाटे : किती इक जोधान के सीस काटे : किते डील गहि पील बंत घर नी : तरफें करें नीर ज्यो मछ फिरती : कहुं हे बरं जुंद्ध गहतानि वाले : कहं पाय प्यादे गहि धानि माले कहं सांग वालें कहुं लुक देरि कहं वांन छंडे सधरं समोरे : कहुं सीस गुरजं किय पानि वाहे : सिर चुन करते बि धुंनी उपाहे : कहुं अर गला वीर वाहंत जोरे : कहु काटतें सीस सीसं अमोरे क हुं संकर मारवाहें अमानें मनो कीमति

८८ वार दरवेसजांनै : कहुं कंध पै बंध
नावत फरसी : कहुं जमराजं सबै सेंन
ग्रसी कहुं अंक संहार कें अचले तेः
कहुं अर्गला तोर सिर मांह दे ते : कहं
वीर वाहै भसुडं निकारी : कहु कंपनी
हलहीकं अकारी : कहुं संगसपेल
गाँवं जोरे कहुं वीर किरवांन करी
वांन पावै पर रुंड धरती सुरुंडंन
चावे कटारी कीये अंगउर फोतनारी
षुली द्वार मांनु अटारी सुंबारी कहुं
षंजरं पंजरं मार फारे : कहं रंज
कंमारहि कंसुधारे अली भांत कमास
कन्ह आए : धनें सेंन-चंदेल धरनी
मिलाहे भगी सेन चंदेल चषं आल्ह
सोरु भये आरु अगेंरहें धुठि लोडूहे :
भगी सेन आलन लषी : सावंत तेज
अपाल राषी सरनै सेनसर भयो अगतर
नाह १ चोपई ये सेना असुरे : वचन
कन्ह सो बोलि कसरे सुनी चहु वीनअप
तु जंग कीजै : सब सेना को दुषनदीजैर

६९ आल्ह सक्त को मंत्र उपायव: सो
अर्जुन कोर सबताइव: निद्रा अस्त्र
प्रयोग सु कीन्हव: उच्चंत सावंत
सूरन बीनव: १ छंद पध्धरी उचर्यो
आल्ह बीनो निरार: सुनीयो सु कन्ह
कय मास धार सब सेन काज दुष
देय काय: कीजीयै जुध मो संग चाय:
जपियो सु मंत्र तारा सुभाय: कीनो
सु ध्यांन उर मध्धि लाय: हुंकार कीयो
देवी वलिष कल कार कीन ललकार
दुष निद्रा प्रयोग कीनो सुवीर अ
चंत वीर सावंत धीर कमास के न
पुडीर चंद पंजौन जैत सावंत दंद:
तोवर पहार श्रु ललष सोय: भौहा
चंदेल नर स्वंच्छ लोय: परिहार पीप
चांदा सुनंन्ह: धावर सुधीर जयमाल
पन्ह: षर हंड निरवांन सावंत सार
चीची सु डोड षेतां सुंधार सावंत इते
अच्चंत तार वजरंग वीर तज जंग
राह: अच्चंत अप्रोध चष नीर लाय:

छंड व सुदुंद सावंत भाय : दौरे सुजोध
चंदेल सैन : बल वंत वीर मोहत
नैन : केते कसील डुरंत मार के
तेक अंग जग होत कार केते कचरन
लुटं तजंग : केते कहय तर पत अंग :
केतेक लुरन कीट कीट हुलास केते
क गये चहुवांन पास : नरनाह क
न्ह कय मा[illegible] स सौय : छंड्यो जंग
पुन मंत हौय : मारंत आल्ह सज
सेन सूर करीयें सउपर करूर अचर
ज पाय प्रथीराज सर्व बोल्यो सु चंद
वरदाय लब क[illegible]न्हो ~~सुनीय नरेस~~
सुमंत्र अल्हन अपार तबछाड जुध सौं
वत पुकार उचरें चंद सुनीयो नरेस :
कीयो प्रयोग आल्हन सुवेस : तारा
रू अस्त्र कीने उपाय दीनो जु मंत्र
संकर सहाय : परस्य कौन करेंव
समंध सोई कीयो आलें तुम पर
सिध अवतार सत्न को भयो आय :
दीन्हुं जु मंत्र गोरष राय : कवित्त :

कहें चंद सुनि राज आल्ह अवतार
सलिमय: गयेसिकार ३ कवाररा
त्ति उच्चाय मुलिरय: गिरउपरतप
तपै तहां गोरष सिध बैठव: मूल
मगया चरें फिरतवन संघ सुदिठव:
लगीयो पायजसराजसुव: हथजो
र विनती करीय: मोहि संग लेहु उदोस
करीय तजो रूवन इह उर धरीय: १
आल्ह सीस हथ मेल्ह कही गोरष मु
ष वांनीय: रह्यो वरस लग धार
देहुं दरसन इह मांनीय: करहुं वना
फर सेव: रैन दिन गए चिल कर हाथ
पाव रावंत: प्रात उठ नीर वीर भरि
एकलो होय कर बंधीय अंतरगत
स वही लहीय: काई सपष देषो निरष
एक दिवस रोजन भईय: २ चोपई तब
गोरष बोले वांनीय: आल मागि
कहहु मन मांनीय: वरस एक लग साध
व मोकुं: मोगा सोयरषु तोकुं: १ दूहो
अस्त्र सस्त्र सषियजुं सबे कीनी अमर

२ जु देह : ऊरल लग ग्रह में रहे : पाछे
जोग संदेह र चावंड को कीजें विदा:
गहि ल्यावें परमाल : आलतारु अग्र
कर कीजै जुध्य विसाल ३ चावंड कुंज
विदा कीयव: कैद करन चंदेल : आ
त ताई अग्र कर कीयो जुध को बेल : ४
छंद त्रोटक : रिको १ तबें प्रथी राजमनं:
मुष मंत्र उचारिय आप नृपं : अरिको
उपजावल देह द्रुपं : गिरजाहर संकर
ध्यान कयं : आलताई नरे सुर अग्र दयं:
महा काल का ध्यांन धस्यो जब ही :
आलताई सुसिध्ध कस्यो तब ही वरबीर
आराधनवंद कय: निफरे वर वीर
चले दल मै हथ लेइ त्रिशूल चल्यो
वलमै मुष मत्र उचार नही पलमै मंत्र
सिध्ध कीयो नृप सो हलमै किर कार ही
कालिका आवकी सब नीद गइ सब
साह चकी कय मासर कन्ह जगे
जबही सब सो वंत तेज च छ्योत वही
बिंब षंड विहंड गयंद कीये अलनांतन

धाव विसुंज कीये: नंद वांनीय के
सब आय गयो: रन मधि कमास
उठाय लयो: जितनै अतलाइय मेल
कीयं करमें सबके जुनिसूल दीयं
लटक्योतन केस सब भुम पर्यो: बलि
राव चंदेल सो आंन अर्यो: अतलाइय
धावन सोज कर्यो: इह आलेइ इलो
उपराव कीयो: गहलोत सुगोयंद रा
ज चढे: भर भाजत पील के दंत कटे
गजराज पर्यो धरनीयल मै: जगनकाप
ल्यो बल सोफल मै जगनक चलायव
कन्ह रुष: फिरवांन सुं दीनीय कन्ह
मुषं भरम्यो कीवराज धरनि पर्यो:
लिह उपर दाहिमां आंन पर्यो: कथ
मास लगाइय तेग तनं: भरम्यो कीवराज
समाज रनं कीवराज सु सांग लई कर
मै कथ मास पचार जस्यो उर मै परीयो
धरि दाह मांजैत सनी सन मुष चलाइय
तेग हनी परीयो कीवराज धरनिय
लं जिन रुंड उठ्यो दोय देष दलं: धरनी

घर दोयरन सीस वनां : किरवांन वहै
४ सिर धार मनां ; विन सीस जगनक
पील हन्यो ; भर सुरमहा चहो प्रांनग
न्यो ; दूहो ; जगनक परयो सु सीस घा
उभ्यो रुंड कर रोस ; पील हन्यो देखो नृ
पति कीरि करवांन हैं जोस ; १ कवत्त ;
रुपि जगनन करन मांह हथ वाह वरह
थिय ; कीयो कन्ह सुरमाय विये कय
मास मंथिय ; हलीयो सेनभार रुंड ना
च्यो विनसी सहै ; मारि जोर प्रथीराज ;
पील मार्यो कीरि रीस है कीनो कहा न
रन मांझ कट लोह लहर बाढव सूझर
जपी सु चंद वांनी वरन ; थाट थाट का
ढव कहर १ दूहो ; अतताई अल्हप
कहि चाल्यो बलवांन ; उतें वना
कर आयके मिल्यो वीच मिलांन
१ चोपई पेलें पिलवांन चलि आयो ;
अतताई इह सेजुं चलायो विच आय
उतरें दोउं विर है मल जुध मांड्यो
रन धीर है १ छंद रसावली वीर

३७५ जागे वलं: पील लागे बलं : कौन
ताढे कलं दोय काढे मलं कौनजोरे
कलं सीस ढेदे ढलं थालरढे वलं वी
रनचेनलं :डौलि विरचे बलं : हाक मा
री हलं ताक सीसं सरं विफरयो सं
भरं धाकहेयं सरं नेहन्यारे करं धाय
करतो घ्यनं. जाय जुरते जनं: दाय
देते दयं: न्हय करते-चयं: धाय कर
ते घटं: उलटीते नटं चोट करते-चटं
बेंग बोटे बटं मार मारंरटं सार सूंध
चटं सार झारे झटं झार करते कटं
झारि श्रीन मधं भांनबे चैरघं चोवढे
हघं लोय लघं बघं: जगराजं जरं भीम
मने भरं जंग भरी मच्यो: वीर नारद
नच्यो फाग धर्गा पिल्यो: भूमि च्रंग
मिल्यो: मत बारे जिहां: धाय धूमै
विहां: भीम कीच कही वीर हचं
वही पोव सांचो बहुं देवदेते बहुं वीर
बाहें खरें धूम धरनी गिरै खीलहसग्या
गई मार भारी भई दूहो: भये मूर्छा खालरव:

८५ अथ ताताई छंद ता समयें प्रथीराज सौं
वांनी बोल्यो चंद १ चोपई आल्हा गिर
मोरचा वाई दोउ वीर मिरे घर आई
ब्रह्मा दित को बेग मारो नांतर उहै
आल हरनसारो २ दुहा: ब्रह्मादित
सुं जंग कर संभर राव संभार
जब लगहै अल्हन सुभट तब हारो
गंवार १ कवित्त: हक पील प्रथीराज
चल्यो चंदेल सनमुष: रस मंत्र उ
चार वीर घार जंत्र मुष: नृपति
आप हंकार बांन संधांन पांन
कीय: षेंजराज को वंड कांन लग
बांन पिंड किय भेदंत ही षेदंत तन:
फुट सनाह हय धर मिलन सायव
वाह संभर धनी य: अग बोल डीलन
पिलीय: दुहो लग्यो तीर चंदेल उर
फुट सनाह प्रवीन: हय पाखर बेधे
रहुं मगन मन स्वय कीन: २ कवत्त:
लग्यो तीर चंदेल धस्यो प्रथीराज सन-
मुष: कइ नायक हंकार वीर साथ क

366 सहाय जुध: आव आव प्रथीराज
चाव वगनि सु षेलव: केरा जुध त्रि
शूल जुध सावंतन ठेल हुं: किरवांन
कुंवर धार कहर कर प्रथीराज षेंच
लीय: वहां केंन वीर वम सायहय
लोह लहर भर मिलियव: छंद भुजंगी:
चला यो चंदेल मुषं चहुवांन: पीछा-
वांन अंगं उमंगं उजान: दई सांगह
थं हनि रावही कं भई पार ही कं अनी
ही सपा कं भिदे कंगलं देह धुनी स
लां को मनो नटवान नट षेल्यो कलां को
घुमायो विंयं सांग लगी चहुवांनं:
करी मुठ राजं जुरयो प्रबानं लगेवांन
घायो व्रला दित सूरं हन्यो राज किर
वांन मधे करूरं लगी हीक चंदेल
की गाल सूते लष्यो चंदेल ववराय
नैनं सहूते कीयो मंत्र संजीवनं भर
राजे तबें वीर चहुवांन षेल्यो समाजै
लीयो अर्ध चंद्र तीय बांन हथं: हन्यो
तिन चहुवांन चंदेल मथं: पस्यो सीस

६८ धरनी कुवार नवीनो: लीयो ई सध्या
ये वरं मेर कीन्हो भगी फौज चंदेल
चहुं ओर जीत्यो: भये चेत आल्हइ
तें अजताइ लये षग हथं मिले लोह
आई अन्यो अन्य वारं करें दोय अगं
अम हैं हुठें नही जोध जंग करी पेल
आल्ह चल्यो राज सुषं: धरं स्वामध
र्म उरं सूर सुषं: चलें सुरबान ते प्र
थीराज रूषं हरी खंच कन केस पा
लंन मूषं: चलीरांम पीरहार अन्चलेस
भटी निडुरराय मौहां हमीर सुर ठी
गंभीरं प्रसंगं सुजादो जवानं जइवा
गरी देव षेती सयानं जहां हुंन षर हंड हो
उं जवांन जहांहा हुलिबाव मंड्योउ
ठानं: तहां चालकं चेति सारंग ध्या
यो इ तें मेल सावंत आल्हं चुकायो:
परे मूरछा जोय कें मांस चंदं: वलीरा
य पजौन वाहै सु दंदं जहां निडुरराय
तोवर पहारं परयो पील पीपानर खंच
भारं इ ते सर्व सूतै अचेत उठानं ॥

२६५ उरं संजमंराय गोला कुगानं: वीयंत्रा
य सावंत आल्हीन सुके पचारे वयनंस
बे उचकू के: लषे सावंत आल्ह वानं
वरसै: महावीर जोधांन के प्रांन गरसे:
कीयो गोरष ध्यान विद्या पसारी प्रियो
गं गिरे सर्व सामंत भारी गुरंराय वर
दाल आल्हं फिरायो लगये वरं और ह
स्ती फिरायो: बलीराज विद्या अनेकं
उपाई गुरं राज चंदं सुजानंन पाइ भईए
कवींनी अमाहर आई अहो आल्ह
गुरु भट जीते न जाइ चोपइ आल्ह मं
त्र किरवांन स जुते लगि२ उस सब
सांमत सूले: भये मोरछा सब वरदा
इ गोरष की विद्या कलाई १ चंदरंग
गुरु आयस पत्ते रुके अल्ह समर मैं तैं
ऋावर अनेक करें हरि के: अंतर छ
गोरष हैं ह बके बोले गोरष सुनरे भाइ
वालन भटन जीते जोइ समर वोम
जोग पंथ लीजै काया काजै अमर
सु कीजै फिरे आल्ह समर तजि सूरे

८० गोरष नेमित्त दीने पुरे देह अमर करब
न कु चाए: छोड्यो भोग जोग मनल्या
ये दूहा: आलत फिरें जस मर
को छंड भोग को वास गोरष संग
तजि के जये: धरि निरंजन आस १
कवित्त: लोह लग चहुवांन: गिरे
मुरछत है धरतीय: उर गीधनी कैं.
बैठ चंच बाहंत विरतीय: देष्यो सं
जमराय: नृपति दग दाढनपंषनि:
अपने तन को मांस: कार भष दीयो
तत षण: अपनै सुन्योन देष्यो नृपति
अंत समै धरमें मिलव आयो विमां
नै वैकुंठ लै देह सहत धरचीलयव: १
दूहो: गिरजन कोपल भगदियव: नृ
प के नयन वंचाय: देह सहत वैकुंठ
को पहुंचे संजमराय: १ कवित्त:
चावंडराय चलाय: जाय कलंजर
गढ विढव: दरवाजै कर बंधनाल
पोलन मधि बंधव: पाछे लग दाहमां जा
य चंदेल हकारव: आगै आये सूर

मार कीने वर धारव पकरियो हथ दिल
३८१ द्रवन हय पैमार सु चलियो तीसरें दिव
स मध्यांन दिन: चहुवांन से मिली
यो १ छंद पधरी: चावंड जीत धमाल:
न्याय परिहार सघ सबही चपाय: मो
पति पकरि पट केत भूमि लीनो सोई
भेजा झूड जिम: लीनो सुहथ चंदेल
धाय: तसरें दिवस रन मध्य आय:
दोर लग चहुवांन धाय: दीन्हो सुपकर
चंदेल आय हाथी सुतील गाजंत मद
धोरे हजार उक नीस मद: मांन कहें
मध्यनां प्रवाल: हीरा अनेक अमोल
लाल सत कोर दुव कीने सुमार राह
मां लाय सब जीत मार चहुवांन
काज किंनव सलांम समप्पो सुआय
चंदेल ठांम: गुरराज चंद चावंड धाय
उंचाय नृपत पाट बंधाय: चहुवांन
हुकम कीनो सु फेर दुंदोस सर्व सा
मंत हेर कें मास क नृप जोत जैत: नर
स्पंच वीर जाम मन समेत

८२ तोवर पहार पुंडीरचंद धावर सुधी
र वहि परि दंद : षेता षंधार हाडा
हमीर हा हुलराय धरि परगंभीरस
व सुभट सूर रन पर अचेत्त भयो वि
षम जुध रोचि श्रोन षेत वरदायचंद गु
र रांम देव: पीठ मंत्र जीवन सर्व भेव:
जगे स सर्व सामंत सूर दिली मिल
अ संबअलि मलित नूर कर कूचन्र
पति दिली दिसांन: पेंजुन बोली ह-
जूर आन तुमर होम हो वे सु भटथांन
धर सुंप भारह हय गय प्रमांन: दोहा:
दीयो भारथ जीन भुज: राषम होवे धां
न डंड छाड परमाल को कीन्हो न्रप
त पयांन : १ चहुवांन ढीलीयनयर की-
न्हो नृपति प्रवेस: घर घर मंगल महल
हुव: आयो जीत नरेस: २ संजमराय
कुंवार को बोलहजूर नरेस हयगयम
न मांग रूबगस अध आसन अध देस: ४
प्रथीराज जीते समर संकर स्रात प्रसाद प्र
चंडराज चंदेल को गुमायो विषवाद ४

इति श्री महोबाको समो संपूर्ण:।। संवत
१९२४ वैसाख कृष्ण अष्टमी ।